facebook.com/thebharatshri
twitter.com/thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 16 जून 2025 ● वर्ष 6 ● अंक 47 ● मूल्यः 5 रुपए

पड़ोस की नई कहानी, यूनुस...

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी के अनुसार, इस सृष्टि की उत्पति में 'महाब्रह्म' की प्रमुख भूमिका रही है। वह इस सृष्टि का प्रारंभिक और परम तत्व था, जिसका आरंभिक काल में किसी को ज्ञान नहीं था। बाद में मां दुर्गा ने महाब्रह्मर्षियों को यह रहस्योद्घाटन किया। यह ज्ञान साधारण बुद्धि से परे, चित और मन से भी अतीन्द्रिय है।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी

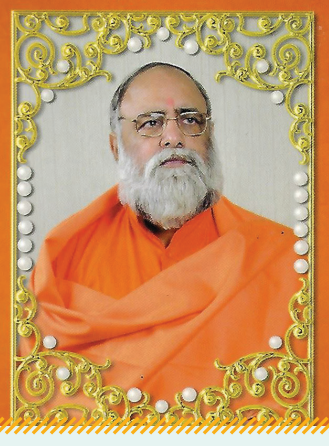

आवागमन भय का विषय नहीं है। भय तब उत्पन्न होता है जब अपने आवागमन को सुधारने का प्रयास नहीं करते। संसार में आने वाला व्यक्ति संसार से विद्रोह कैसे कर सकता है? संसार से भागना कायरता है, उसे जीतें। मेरे लिए सच्ची मुक्ति का मतलब यही है कि हम इसी अवागमन में रहकर परमात्मा को सहजता से प्राप्त करें और अपने हर प्रकार के कष्टों से पूरी तरह मुक्त हो जाएं।

●

ना तो काम शत्रु है और ना ही स्त्री। तथाकथित सन्यासियों और ब्रह्मचारियों को इस सनातन सत्य को स्वीकार करना चाहिए, मनुष्य चाह कर भी प्रकृति से विद्रोह नहीं कर सकता।

केदारनाथ रूट पर हेलिकॉप्टर क्रैश

23 महीने के बच्चे सहित 7 की दर्दनाक मौत

तीर्थयात्रियों से भरे उत्तराखंड के पवित्र रास्तों पर रविवार की सुबह एक बड़ा हादसा हो गया। श्री केदारनाथ धाम से गुप्तकाशी जा रहा एक हेलिकॉप्टर सुबह करीब 5:30 बजे गौरीकुंड के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हेलिकॉप्टर में सवार सभी सात लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों में एक 23 महीने का मासूम बच्चा भी शामिल है।इस हादसे ने ना सिर्फ प्रभावित परिवारों को झकझोरा है, बल्कि पूरे देश को गमगीन कर दिया है। मौसम की खराबी को हादसे की वजह बताया जा रहा है। इसके बाद से दो दिन के लिए हेलिकॉप्टर सेवाएं रोक दी गई हैं।

पेड़ से टकराकर क्रैश हुआ हेलिकॉप्टर

जानकारी के मुताबिक, आर्यन कंपनी का यह हेलिकॉप्टर केदारनाथ से गुप्तकाशी के लिए रवाना हुआ था। हेलिकॉप्टर कुछ दूर ही पहुंचा था कि गौरीमाई खर्क के जंगलों में जाकर पेड़ से टकरा गया और क्रैश हो गया। आसपास घास काट रही नेपाली मूल की महिलाओं ने हेलिकॉप्टर गिरने की सूचना स्थानीय प्रशासन को दी।घटना की पुष्टि जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार और हेलिकॉप्टर नोडल अधिकारी राहुल चौबे ने की। शवों की हालत देखकर अंदाजा लगाया जा रहा है कि टक्कर के बाद आग लगने से वे बुरी तरह झुलस गए।

हादसे में जान गंवाने वाले सभी यात्री

राजकुमार सुरेश जयसवाल (41) – वाणी नंदेपेरा रोड, सैन मंदिर, महाराष्ट्र

शारदा जयसवाल (35) – राजकुमार की पत्नी

काशी (23 महीने की बच्ची) – जयसवाल दंपति की बेटी

तुस्ती सिंह (19) – बिजनौर, उत्तर प्रदेश

विनोद देवी (66) – बिजनौर, उत्तर प्रदेश

विक्रम सिंह रावत (46) – रांसी गांव, ऊखीमठ, बीकेटीसी कर्मचारी

कैप्टन राजीव चौहान – राजस्थान निवासी, आर्यन एविएशन के पायलट

हादसे के तुरंत बाद राहत और बचाव अभियान

जैसे ही हादसे की खबर मिली, एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीमें तुरंत मौके पर रवाना हुईं। घाटी में मौसम खराब था, इसलिए बचाव अभियान में चुनौतियाँ आईं। शवों को बाहर निकालकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। हेलिकॉप्टर सेवा को अगले आदेश तक बंद कर दिया गया है। गढ़वाल कमिश्नर विनय शंकर पांडे ने बताया कि हादसे वाली जगह एक ट्रैकिंग रूट पर है और वहां तक पहुंचना काफी कठिन था। बावजूद इसके राहतकर्मी मौके पर पहुंचे और अभियान पूरा किया।

मुख्यमंत्री ने बुलाई आपात बैठक

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने हादसे पर गहरा शोक जताया और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वर्चुअल उच्चस्तरीय बैठक बुलाई। बैठक में राज्य के मुख्य सचिव, यूकाडा के सीईओ, आपदा प्रबंधन सचिव सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।सीएम धामी ने निर्देश दिए कि हेलिकॉप्टर सेवाओं के लिए सख्त एसओपी (स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर) तैयार की जाए। उन्होंने कहा कि उड़ान से पहले मौसम की सटीक जानकारी लेना और हेलिकॉप्टर की तकनीकी स्थिति की पूरी जांच अनिवार्य की जाए। मुख्यमंत्री ने मुख्य सचिव को तकनीकी विशेषज्ञों की एक समिति बनाने का निर्देश दिया, जो हेलिकॉप्टर सेवाओं की सुरक्षा और संचालन के हर पहलू की गहन समीक्षा कर रिपोर्ट देगी।

यूकाडा सीईओ ने क्या कहा?

उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण (यूकाडा) की सीईओ सोनिका ने बताया कि बचाव अभियान में लगभग सभी हेलिकॉप्टर लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि घाटी में खराब मौसम के कारण शटल सेवाएं अस्थायी रूप से बंद कर दी गई हैं।हेलिकॉप्टर हादसे की जांच एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो (एएआईबी) करेगा। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (DGCA) ने भी चारधाम यात्रा में हेलिकॉप्टर संचालन पर सख्ती बरतने के संकेत दिए हैं। संचालन की आवृत्ति पहले ही कम की जा चुकी थी।

इससे पहले भी हुई हैं दुर्घटनाएं

यह कोई पहली बार नहीं है जब उत्तराखंड में हेलिकॉप्टर हादसा हुआ हो।

MN DIVINE

ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.

NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM

ORDER NOW https://mndivine.com/

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

16 राज्यों में होने वाली है झमाझम बारिश

मानसून की सक्रियता बढ़ी

@ अंकित कुमार

भारत के 16 राज्यों में सोमवार, 16 जून को भारी बारिश की चेतावनी जारी की गई है। मौसम विभाग के अनुसार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, असम, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम और नगालैंड में तेज बारिश और आंधी-तूफान की संभावना जताई गई है।

मध्य प्रदेश और राजस्थान में मौसम हुआ एक्टिव

मध्य प्रदेश में प्री-मानसून गतिविधियाँ तेज हो गई हैं। नरसिंहपुर और डिंडौरी में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया है। राज्य के अन्य हिस्सों में भी आंधी-बारिश की संभावना है। मौसम विभाग ने 16 जून तक मानसून के प्रवेश का अनुमान जताया है।राजस्थान में रविवार को लगातार दूसरे दिन प्री-मानसून की बारिश का दौर जारी रहा। जयपुर, जोधपुर समेत 14 जिलों में भारी बारिश हुई। मौसम विभाग ने सोमवार को राजस्थान के 11 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

उत्तर प्रदेश में भी मानसून ने दी दस्तक

उत्तर प्रदेश में भीषण गर्मी के बीच बारिश का दौर शुरू हो गया है। मौसम विभाग ने 62 जिलों में गरज-चमक के साथ बिजली गिरने और बारिश की चेतावनी जारी की है। 18 जून को गोरखपुर के रास्ते राज्य में मानसून की एंट्री होने की संभावना है।

केरल और कर्नाटक में रेड अलर्ट

केरल के पांच जिलों (मलप्पुरम, कन्नूर, कासरगोड, वायनाड और त्रिशूर) में भारी बारिश के कारण रेड अलर्ट जारी किया गया है। इन जिलों में सोमवार को स्कूल और कॉलेजों में छुट्टी घोषित कर दी गई है। कर्नाटक में भी रेड और ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है, जिससे उडुपी और दक्षिण कन्नड़ के जिलों में स्कूलों में छुट्टी घोषित की गई है।

अगले दो दिनों का मौसम पूर्वानुमान

17 जून: तमिलनाडु, पुडुचेरी, विदर्भ, पूर्वी मध्यप्रदेश, गुजरात सौराष्ट्र, बिहार, सिक्किम में भारी बारिश का अलर्ट है। ओडिशा, उत्तराखंड, राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखंड, महाराष्ट्र, केरल और कर्नाटक, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, बंगाल, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में बारिश का ऑरेंज अलर्ट है।

18 जून: गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ, मध्य महाराष्ट्र, पूर्वी मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, केरल, कर्नाटक, पूर्वी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बंगाल, सिक्किम में भारी बारिश का अलर्ट है। बिहार, झारखंड, ओडिशा, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में बारिश का ऑरेंज अलर्ट है।

केदारनाथ यात्रा पर रहेगा असर

केदारनाथ यात्रा हेलीकॉप्टर हादसे और भारी बारिश के कारण प्रभावित हुई है। यात्रा को आगे बढ़ाने पर रोक लगा दी गई है, जिसके चलते कई यात्री फंसे हुए हैं। कोटा का एक बुजुर्ग दंपत्ति भी केदारनाथ में अटक गया है। उनकी हेलीकॉप्टर बुकिंग रविवार सुबह के लिए थी, और वे हेलीपैड पर पहुंच चुके थे। लेकिन भारी बारिश और पहाड़ों से मलबा आने के कारण सड़क मार्ग बंद कर दिए गए, और हेलीकॉप्टर यात्रा भी रद्द कर दी गई।

मध्य प्रदेश में आंधी-बारिश ने मचाया कहर

मध्य प्रदेश में रविवार को आंधी-बारिश ने जमकर कहर बरपाया। नर्मदापुरम, बड़वानी, खंडवा आदि जिलों में आंधी के साथ बारिश हुई। राजधानी भोपाल में बिजली गिरने से एक बच्चे की दर्दनाक मौत हो गई। प्रदेश में मानसून के प्रवेश का इंतजार किया जा रहा है लेकिन प्री मानसून एक्टिविटी से राज्य तरबतर हो रहा है। मौसम विभाग ने प्रदेश में 16 जून तक मानसून आने का अनुमान जताया है। विभाग ने राज्य के 47 जिलों में रविवार को आंधी बारिश का अलर्ट जारी किया है।

अहमदाबाद में एयर इंडिया विमान दुर्घटना एक त्रासदी की पूरी कहानी

12 जून 2025 का दिन भारत के इतिहास में एक काले दिन के रूप में दर्ज हो गया, जब अहमदाबाद के सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरने वाला एयर इंडिया का विमान AI171, एक बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर, कुछ ही मिनटों बाद मेघानी नगर के घनी आबादी वाले इलाके में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। यह विमान लंदन के गैटविक हवाई अड्डे के लिए रवाना हुआ था, लेकिन बीजे मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर्स हॉस्टल से टकराने के बाद इसमें भीषण आग लग गई, जिसने सैकड़ों जिंदगियों को लील लिया। यह भारत की सबसे घातक विमान दुर्घटनाओं में से एक है, जिसने न केवल स्थानीय समुदाय को, बल्कि वैश्विक भारतीय डायस्पोरा और विमानन उद्योग को भी गहरा आघात पहुँचाया। इस त्रासदी ने कई सवाल खड़े किए हैं—क्या यह तकनीकी खामी थी, मानवीय भूल, या बुनियादी ढांचे की कमी? यह लेख इस हृदयविदारक घटना के हर पहलू को विस्तार से सामने लाता है, जिसमें दुर्घटना का विवरण, तकनीकी कारण, विशेषज्ञ विश्लेषण, हताहतों की त्रासदी, सरकार और संगठनों की प्रतिक्रिया, बोइंग के आसपास के विवाद, ऐतिहासिक हवाई दुर्घटनाओं से तुलना, और इसके बाद के परिणाम शामिल हैं।

घटना का विवरण

12 जून 2025 को दोपहर 1:38 बजे, एयर इंडिया की उड़ान AI171, एक बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर, जिसका पंजीकरण VT-ANB था, अहमदाबाद के सरदार वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से लंदन गैटविक के लिए उड़ान भरी। विमान में कुल 242 लोग सवार थे, जिनमें 230 यात्री और 12 चालक दल के सदस्य शामिल थे। इन यात्रियों में 169 भारतीय, 53 ब्रिटिश, सात पुर्तगाली और एक कनाडाई नागरिक थे। यह एक नियमित उड़ान थी, जो भारत और यूके के बीच मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों का प्रतीक थी। लेकिन उड़ान भरने के कुछ ही मिनटों बाद, विमान हवाई अड्डे से मात्र 1.5 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में मेघानी नगर के बीजे मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल से टकरा गया। टक्कर इतनी भीषण थी कि 100 टन ईंधन से भरे विमान में विस्फोट हुआ, और आग की लपटें आसमान छूने लगीं। इस दुर्घटना में एकमात्र जीवित बचे व्यक्ति 40 वर्षीय विश्वशकुमार रमेश थे, जो ब्रिटिश-भारतीय मूल के नागरिक हैं। वे सीट 11A पर आपातकालीन निकास के पास बैठे थे, जिसने उन्हें जलते मलबे से बाहर निकलने का मौका दिया। विश्वशकुमार ने इसे एक "चमत्कार" बताया, लेकिन उनकी यह कहानी इस त्रासदी के भयावह पैमाने को और भी उजागर करती है।

हताहतों की त्रासदी

इस दुर्घटना ने सैकड़ों परिवारों को हमेशा के लिए बदल दिया। प्रारंभिक रिपोर्ट्स के अनुसार, विमान में सवार 242 लोगों में से 241 की मृत्यु हो गई। जमीन पर भी कम से कम 29 लोग मारे गए, जिनमें बीजे मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल में दोपहर के भोजन के समय मौजूद आठ मेडिकल छात्र शामिल थे। कुल मृतकों की संख्या 269 से 279 के बीच बताई जा रही है, लेकिन शवों की पहचान में गंभीर चुनौतियाँ हैं। आग इतनी भीषण थी कि कई शव पूरी तरह जल गए, जिसके कारण डीएनए टेस्टिंग की आवश्यकता पड़ रही है। फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया मेडिकल एसोसिएशन (FAIMA) ने बताया कि हॉस्टल में 50 छात्र घायल हुए, चार लापता हैं, और दो की हालत गंभीर है। मृतकों में कई उल्लेखनीय लोग शामिल थे, जिनमें पूर्व गुजरात मुख्यमंत्री विजय रूपाणी, ब्रिटिश दंपति अशोक और शोभना पटेल, युवा पेशेवर बहनें धीर और हीर बक्सी, केबिन क्रू सदस्य सिंगसन, जो अपने परिवार की एकमात्र कमाने वाली थीं, और रक्षा मोधा अपने दो वर्षीय पोते रुद्र के साथ शामिल थे। यह त्रासदी केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं है; यह उन सपनों, परिवारों और समुदायों की कहानी है, जो हमेशा के लिए खो गए।

तकनीकी कारण और संभावित खामियाँ

इस भयावह दुर्घटना की जाँच भारत के विमान दुर्घटना जाँच ब्यूरो (AAIB) के नेतृत्व में शुरू हो चुकी है, जिसमें अमेरिका का नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड (NTSB), ब्रिटेन का एयर एक्सिडेंट्स इन्वेस्टिगेशन ब्रांच (AAIB), बोइंग और जीई एयरोस्पेस के विशेषज्ञ शामिल हैं। कई तकनीकी और परिचालन कारणों पर विचार किया जा रहा है। विमानन विशेषज्ञ अहमद बुस्नाइना ने इंजन विफलता को एक प्रमुख संभावना बताया। बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर जीईएनएक्स इंजनों से सुसज्जित था, और दोनों इंजनों का एक साथ फेल होना, हालांकि दुर्लभ, ऊँचाई में तेजी से कमी का कारण बन सकता है। कंप्रेसर स्टॉल या ईंधन संदूषण से थ्रस्ट की हानि हो सकती है, और वीडियो साक्ष्य में रनवे पर धूल का गुबार कम थ्रस्ट का संकेत देता है। जीई एयरोस्पेस ने कॉकपिट डेटा विश्लेषण के लिए एक विशेष टीम भेजी है। इसके अलावा, वीडियो फुटेज में दिखा कि उड़ान के दौरान लैंडिंग गियर बाहर था और फ्लैप्स संभवतः बंद थे, जो एक असामान्य स्थिति है। फ्लैप्स कम गति पर लिफ्ट पैदा करने के लिए महत्वपूर्ण हैं, और गलत फ्लैप सेटिंग्स ने 100 डिग्री फारेनहाइट के गर्म मौसम और भारी ईंधन लोड में विमान की चढ़ाई को मुश्किल बना दिया होगा। पूर्व पायलट टेरी टोजर और विमानन विश्लेषक ज्योफ्री थॉमस ने सुझाव दिया कि यह मानवीय त्रुटि या हाइड्रॉलिक सिस्टम की खराबी हो सकती है।

अहमदाबाद हवाई अड्डा पक्षी टकराव के लिए कुख्यात है, जहाँ 2022-23 में 38 मामले दर्ज हुए। दोनों इंजनों में पक्षी टकराव से बिजली की हानि हो सकती थी, जैसा कि 2024 की जेजु एयर दुर्घटना में देखा गया, लेकिन एक वरिष्ठ पायलट ने इसे कम संभावना बताया। लैंडिंग गियर का बाहर रहना ड्रैग को बढ़ाता है और चढ़ाई को प्रभावित करता है, जो कॉकपिट में विचलन या मानक प्रक्रियाओं का पालन न करने का संकेत हो सकता है। जीवित बचे विश्वशकुमार द्वारा सुनी गई तेज आवाज इंजन स्टॉल या संरचनात्मक विफलता का संकेत हो सकती है। शिव सेना सांसद संजय राउत ने तोड़फोड़ या साइबर हमले की आशंका जताई, लेकिन इसके कोई सबूत नहीं हैं। 100 टन ईंधन और गर्म मौसम ने विमान के प्रदर्शन को और जटिल किया होगा। 13 जून को दुर्घटनाग्रस्त इमारत की छत से डिजिटल फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर बरामद हुआ, जबकि कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर की खोज जारी है। ये उपकरण इंजन, पायलट कार्रवाइयों और सिस्टम स्थिति पर महत्वपूर्ण जानकारी देंगे।

कौन हैं दुर्घटनाग्रस्त एयर इंडिया विमान के पायलट?

- विमान की कमान कैप्टन सुमीत सभरवाल के पास थी
- कैप्टन सुमीत के पास 8200 घंटे से अधिक का उड़ान अनुभव था
- कैप्टन सुमीत एक लॉन्ग टर्म कैप्टन (LTC) थे
- कैप्टन सुमीत के साथ को-पायलट क्लाइव कुंदर थे
- क्लाइव कुंदर अब तक 1100 घंटे का उड़ान अनुभव हासिल कर चुके थे
- विमान ने अहमदाबाद एयरपोर्ट के रनवे 23 से दोपहर 01:39 बजे उड़ान भरी थी

विशेषज्ञों का विश्लेषण

विमानन विशेषज्ञ मोहन रंगनाथन ने हवाई अड्डे की परिधि से मात्र 300 मीटर दूर छह मंजिला हॉस्टल की स्थिति को सुरक्षा उल्लंघन बताया। उन्होंने भारत की विमानन निगरानी पर सवाल उठाए और मुंबई जैसे अन्य हवाई अड्डों पर समान जोखिमों की चेतावनी दी। दोहरे इंजन विफलता को उन्होंने "बेहद दुर्लभ" माना, लेकिन पक्षी टकराव को एक ज्ञात समस्या बताया। पूर्व NTSB जाँचकर्ता ग्रेग फीथ ने कहा कि प्रारंभिक चढ़ाई के दौरान विमान की कम ऊँचाई (625 फीट) एक गंभीर समस्या का संकेत देती है। लैंडिंग गियर या फ्लैप्स की समस्याएँ प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती थीं। विमानन सलाहकार जॉन कॉक्स ने बताया कि विमान की नाक ऊपर होने के बावजूद ऊँचाई न बढ़ना लिफ्ट या थ्रस्ट की हानि दर्शाता है। फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर के हजारों डेटा पॉइंट्स कारणों को स्पष्ट करेंगे। वायु सुरक्षा विशेषज्ञ कैप्टन अमित सिंह ने सुझाव दिया कि कॉकपिट में विचलन, जैसे इंजन विफलता या पक्षी टकराव, लैंडिंग गियर के बाहर रहने का कारण हो सकता है। पूर्व एयर इंडिया संचालन निदेशक कैप्टन मनोज हाठी ने पक्षी टकराव या ईंधन संदूषण से दोहरे इंजन फ्लेम-आउट की आशंका जताई, जिससे स्टॉल हुआ होगा। ये विश्लेषण इस जटिल दुर्घटना के कई संभावित आयामों को उजागर करते हैं।

भारत सरकार की प्रतिक्रिया

भारत सरकार ने इस त्रासदी पर त्वरित और संवेदनशील प्रतिक्रिया दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 13 जून को दुर्घटना स्थल का दौरा किया और विश्वशकुमार रमेश से अस्पताल में मुलाकात की। गुजरात उनका गृह राज्य है, जिसने उनकी प्रतिक्रिया को व्यक्तिगत आयाम दिया। उन्होंने X पर इस घटना को "हृदयविदारक" बताया और पीड़ित परिवारों के साथ एकजुटता जताई। नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर की बरामदगी और AAIB जाँच की घोषणा की। उन्होंने एयर इंडिया के बोइंग 787-8 और 787-9 बेड़े पर अतिरिक्त रखरखाव जाँच का आदेश दिया और 13 जून को वायु सुरक्षा पर उच्च-स्तरीय बैठक की अध्यक्षता की। गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि 100 टन ईंधन ने जीवित बचने की संभावना को शून्य कर दिया। उन्होंने एक उच्च-स्तरीय समिति का गठन किया, जो तीन महीने में मानक संचालन प्रक्रियाएँ (SOPs) प्रस्तुत करेगी। डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन (DGCA) ने बोइंग 787 बेड़े पर तत्काल रखरखाव कार्रवाई का आदेश दिया और 787-8 को ग्राउंड करने पर विचार कर रहा है। टेकऑफ के बाद मेडे कॉल की पुष्टि हुई, लेकिन कॉकपिट से कोई और जवाब नहीं मिला। भारतीय रेलवे ने वंदे भारत ट्रेनें तैनात कीं, ताकि अहमदाबाद हवाई अड्डे के बंद होने से प्रभावित यात्रियों को मदद मिल सके।

अन्य संगठनों की प्रतिक्रिया

एयर इंडिया, जो अब टाटा समूह द्वारा संचालित है, ने गहरा दुख व्यक्त किया। सीईओ कैंपबेल विल्सन ने कहा कि जाँच में समय लगेगा, और उन्होंने 30 तकनीकी कर्मचारियों और देखभालकर्ताओं की एक टीम अहमदाबाद भेजी। एक यात्री हॉटलाइन (1800 5691 444) शुरू की गई। बोइंग के सीईओ केली ऑर्टबर्ग ने पेरिस एयर शो की योजना रद्द कर दी और AAIB को तकनीकी सहायता देने का वादा किया। इस घटना से बोइंग के शेयरों में 5% की गिरावट आई। जीई एयरोस्पेस ने कॉकपिट डेटा विश्लेषण के लिए एक टीम भेजी। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, NTSB और यूके का AAIB जाँच में सहायता कर रहे हैं। लंदन गैटविक हवाई अड्डे ने रिश्तेदारों के लिए एक रिसेप्शन सेंटर स्थापित किया और यूके कांसुलर हॉटलाइन (020 7008 5000) शुरू की। यूके के गुजराती समुदाय, जो लगभग 6 लाख है, ने प्रार्थनाएँ और स्मृति सभाएँ आयोजित कीं। लेस्टर, जहाँ भारतीय मूल की बड़ी आबादी है, इस त्रासदी से गहराई से प्रभावित हुआ।

ऐतिहासिक हवाई दुर्घटनाएँ

बोइंग 737 MAX (2018-19): MCAS खामियों के कारण 346 मृत्यु।
एयर इंडिया फ्लाइट 855 (1978): 213 मृत्यु।
चरखी दादरी (1996): 349 मृत्यु, मिड-एयर टक्कर।
एयर इंडिया फ्लाइट 182 (1985): 329 मृत्यु, आतंकी हमला।
एयर इंडिया एक्सप्रेस 812 (2010): 158 मृत्यु।

बोइंग के आसपास के विवाद

बोइंग पिछले कुछ वर्षों से सुरक्षा और गुणवत्ता नियंत्रण के मुद्दों के लिए आलोचना का सामना कर रहा है, और यह दुर्घटना इन चिंताओं को और बढ़ाती है। 2024 में बोइंग इंजीनियर सैम सालेहपुर ने दावा किया था कि 787 ड्रीमलाइनर के फ्यूज़लेज के हिस्से ठीक से नहीं जोड़े गए, जिससे उड़ान के दौरान टूटने का खतरा हो सकता है। पूर्व गुणवत्ता प्रबंधक जॉन बार्नेट ने आरोप लगाया था कि बोइंग ने घटिया हिस्सों का उपयोग किया और 787 के आपातकालीन ऑक्सीजन सिस्टम में 25% विफलता दर थी। 2018 और 2019 में बोइंग 737 MAX की दो दुर्घटनाओं—लायन एयर फ्लाइट 610 और इथियोपियन एयरलाइंस फ्लाइट 302—ने 346 लोगों की जान ली थी, जो MCAS सिस्टम की खामियों के कारण हुई थीं। इन घटनाओं ने 737 MAX को 20 महीने तक ग्राउंड कर दिया और बोइंग को 2025 में अमेरिकी न्याय विभाग के साथ 1.1 बिलियन डॉलर का समझौता करना पड़ा। 2024 की जेजु एयर दुर्घटना, जिसमें 179 लोग मारे गए, ने भी बोइंग की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाया। X पर लोगों ने बोइंग को दोषी ठहराया, लेकिन कुछ का मानना है कि एयर इंडिया का रखरखाव या पायलट की त्रुटि भी जिम्मेदार हो सकती है। यह तनाव भारत और अमेरिका के दृष्टिकोणों के बीच मतभेद को दर्शाता है।

ऐतिहासिक हवाई दुर्घटनाओं से तुलना

यह दुर्घटना भारत की सबसे घातक विमानन त्रासदियों में से एक है और इसे ऐतिहासिक दुर्घटनाओं के संदर्भ में देखना महत्वपूर्ण है। 1996 की चरखी दादरी मिड-एयर टक्कर, जिसमें 349 लोग मारे गए, दुनिया की सबसे घातक मिड-एयर टक्कर थी। यह पायलट और हवाई यातायात नियंत्रण की गलतियों का परिणाम थी। इसके विपरीत, अहमदाबाद दुर्घटना में एक ही विमान शामिल था और यह आवासीय क्षेत्र में गिरी, लेकिन इसका सामुदायिक प्रभाव समान रूप से विनाशकारी है। 1985 में एयर इंडिया फ्लाइट 182 आतंकी हमले में आयरलैंड के तट पर नष्ट हो गई थी, जिसमें 329 लोग मारे गए थे। अहमदाबाद दुर्घटना आतंकवाद से संबंधित नहीं है, लेकिन इसकी उच्च मृत्यु संख्या और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव समान हैं। 2010 में एयर इंडिया एक्सप्रेस फ्लाइट 812 मंगलौर में रनवे से आगे निकल गई, जिसमें 158 लोग मारे गए। दोनों दुर्घटनाएँ बोइंग विमानों से जुड़ी थीं, लेकिन अहमदाबाद की दुर्घटना टेकऑफ के दौरान हुई। 1988 में इंडियन एयरलाइंस फ्लाइट 113 अहमदाबाद हवाई अड्डे के पास खराब दृश्यता के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी, जिसमें 133 लोग मारे गए थे। यह तथ्य कि दोनों दुर्घटनाएँ एक ही हवाई अड्डे पर हुईं, पक्षी टकराव और बुनियादी ढांचे की समस्याओं पर सवाल उठाता है। वैश्विक संदर्भ में, यह एक दशक की सबसे घातक दुर्घटना है, जो 2024 की जेजु एयर दुर्घटना (179 मृत्यु) से भी बड़ी है।

परिणाम और घटनाक्रम

दुर्घटना के बाद, भारतीय सेना, वायु सेना, तटरक्षक बल, राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF) और स्थानीय आपातकालीन सेवाओं के 500 से अधिक कर्मियों ने बचाव कार्य में हिस्सा लिया। तीस एम्बुलेंस और दमकल वाहनों ने आग बुझाने और घायलों को बचाने में मदद की। हॉस्टल की इमारतों को खाली कराया गया, और संरचनात्मक मूल्यांकन शुरू हुआ। AAIB की जाँच प्रारंभिक निष्कर्षों के लिए महीनों तक चलेगी, और अंतिम रिपोर्ट 2026 में अपेक्षित है। आतंकवाद विरोधी विशेषज्ञ शामिल हैं, लेकिन तोड़फोड़ प्राथमिक फोकस नहीं है। अहमदाबाद हवाई अड्डे ने 13 जून को सीमित उड़ानें शुरू कीं। सिविल अस्पताल में शवों की पहचान में देरी हुई, और केवल छह शव चेहरे की पहचान के आधार पर परिवारों को सौंपे गए। स्थानीय निवासियों ने एक बम जैसी आवाज और मलबे का वर्णन किया, और अहमदाबाद में मोमबत्ती जुलूस निकाला गया। यूके विदेश मंत्री डेविड लैमी ने समर्थन की पेशकश की, और अमेरिकी परिवहन विभाग और FAA बोइंग और जीई की सहायता कर रहे हैं। एयर इंडिया अपने 787 बेड़े की अतिरिक्त जाँच कर रही है, और बोइंग तकनीकी सहायता दे रहा है।

व्यापक प्रभाव और वैश्विक चिंता

यह दुर्घटना भारत की विमानन सुरक्षा पर गंभीर सवाल उठाती है। विशेषज्ञ मोहन रंगनाथन ने भारत की प्रतिक्रियात्मक सुरक्षा प्रबंधन और अपर्याप्त निगरानी की आलोचना की। 2019 के ICAO ऑडिट ने हवाई यातायात सेवाओं और नियामक प्रवर्तन में कमियाँ उजागर की थीं। अहमदाबाद हवाई अड्डे का पक्षी टकराव और रनवे के पास इमारतें बुनियादी ढांचे की चुनौतियों को दर्शाती हैं। बोइंग की प्रतिष्ठा को इस घटना ने और नुकसान पहुँचाया है, जो पहले से ही व्हिसलब्लोअर आरोपों, पिछले हादसों और आर्थिक दबावों से जूझ रहा है। यूके के गुजराती और भारतीय डायस्पोरा पर इस त्रासदी का गहरा प्रभाव पड़ा, क्योंकि कई पीड़ित भारत और ब्रिटेन के बीच यात्रा कर रहे थे। उच्च-स्तरीय समिति का गठन भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने की दिशा में एक कदम है, लेकिन विशेषज्ञ सक्रिय प्रवर्तन, बेहतर पायलट प्रशिक्षण, रनवे सुरक्षा और हवाई अड्डा बुनियादी ढांचे में सुधार की माँग कर रहे हैं। यह त्रासदी केवल एक दुर्घटना नहीं, बल्कि उन प्रणालियों पर पुनर्विचार का आह्वान है, जो लाखों लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं।

निष्कर्ष

एयर इंडिया की उड़ान AI171 की दुर्घटना ने भारत और वैश्विक समुदाय को गहरे दुख में डुबो दिया। यह बोइंग 787 ड्रीमलाइनर की पहली घातक दुर्घटना है और भारत की सबसे खराब विमानन त्रासदियों में से एक है। इंजन विफलता, फ्लैप्स की खराबी या पक्षी टकराव जैसे कारणों की जाँच चल रही है। यह घटना भारत की विमानन सुरक्षा, बोइंग की गुणवत्ता और हवाई अड्डों की बुनियादी संरचना पर सवाल उठाती है। सरकार और संगठनों की त्वरित प्रतिक्रिया और समुदाय का समर्थन इस दुख को कम करने का प्रयास है, लेकिन भविष्य में ऐसी त्रासदियों को रोकने के लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत है। यह कहानी उन परिवारों, सपनों और जिंदगियों की है, जो इस आग में खाक हो गए, और यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है कि उनकी स्मृति में एक सुरक्षित भविष्य बनाया जाए।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 16 जून 2025 , विक्रम संवत 2080

चे ग्वेरा का भारत प्रेम

बेतरतीब दाढ़ी, सितारे लगी टोपी, मुंह में सिगार और पांव में ऊंचे जूते.. ये आदमी कई पीढ़ियों के ज़हन में है। भले नाम तुरंत याद ना आए तो भी कोई नहीं कह सकता कि मैंने इस आदमी को नहीं देखा। किसी का अंदाज़ा है कि ये कोई पॉप स्टार है तो किसी ने इसे अमेरिकी हीरो बताया। अमेरिका का सबसे बड़ा दुश्मन अमेरिकी यूथ में आज खूब पसंद किया जाता है। टीशर्ट, जूते, हेलमेट, लाइटर.. किसी भी चीज़ पर आप उसके चेहरे का दीदार कर सकते हैं। जाने-अनजाने कई पीढ़ियां उससे वाकिफ रही हैं। ये चे है.. अर्नेस्तो चे ग्वेरा।

अर्नेस्तो 'चे' ग्वेरा ने क्यूबा का ना होकर भी वहां हुई सशस्त्र क्रांति में अहम रोल निभाया था। फिदेल कास्त्रो ने सरकार बनाई तो दूसरे देशों से संबंध स्थापित करने का ज़िम्मा उन्हें ही सौंपा। नेहरू सरकार ने चे को विशेष आमंत्रण भेजा और 30 जून 1959 को वो दिल्ली के पालम हवाई अड्डे पहुंचे थे। किसी रॉकस्टार सरीखे दिखते चे की अगवानी प्रोटोकॉल ऑफिसर डी एस खोसला ने की थी। 1 जुलाई 1959 को चे और नेहरू की मुलाकात हुई और उन्होंने साथ ही खाना खाया। वो दिल्ली के करीब पिलाना गांव भी गए थे। कमाल ये है कि चे की इस दौरे की जानकारी उन्हें चाहनेवालों को भी नहीं है। लोगों को ये बात हैरान करती है कि वो कभी भारत आए थे। यहां फाइल्स में उनका नाम अर्नेस्ट गेवारा दर्ज है। दिल्ली ही नहीं चे कलकत्ता भी गए और उसके अलावा कई और शहरों में भी। उनके इस दौरे की जानकारियां संजोने का काम किसी ने भी ठीक से नहीं किया। चे के संग्रह में वो तस्वीरें भी हैं जो उन्होंने कलकत्ता की सड़कों पर खींची। वो बंगाल के मुख्यमंत्री से भी मिले थे लेकिन ये बात फिर हैरान करती है कि वामपंथियों तक ने चे के दौरे पर कभी विस्तार से लिखना ज़रूरी नहीं समझा। खैर जब चे क्यूबा लौटे तो अपनी रिपोर्ट कास्त्रो को सौंपी। उसमें उन्होंने भारत के बारे में काफी कुछ लिखा है। सबसे अहम ये है कि खुद हथियार लेकर क्रांति करनेवाले चे ने गांधी के सत्याग्रह के प्रति आदर का भाव प्रकट किया। ओम थानवी के एक लेख के मुताबिक चे ने रिपोर्ट में लिखा- "जनता के असंतोष के बड़े-बड़े शांतिपूर्ण प्रदर्शनों ने अंग्रेजी उपनिवेशवाद को आखिरकार उस देश को हमेशा के लिए छोड़ने को बाध्य कर दिया, जिसका शोषण वह पिछले डेढ़ सौ वर्षों से कर रहा था।"

के पी भानुमति ने ऑल इंडिया रेडियो के लिए उनका साक्षात्कार दिल्ली के अशोका होटल में लिया था जहां वो ठहरे थे। चे ने तब उनसे कहा था - 'आपके यहां गांधी हैं, दर्शन की एक पुरानी परंपरा है। हमारे लैटिन अमेरिका में दोनों नहीं हैं। इसलिए हमारी मन:स्थिति ही अलग ढंग से विकसित हुई है।'

कमाल देखिए कि चे ग्वेरा भारतीयों को युद्ध से दूर रहनेवाला मानते थे। उन्होंने रिपोर्ट में लिखा था - 'भारत में युद्ध शब्द वहां के जनमानस की आत्मा से इतना दूर है कि वह स्वतंत्रता आंदोलन के तनावपूर्ण दौर में भी उसके मन पर नहीं छाया।' अगर चे आज भारत का दौरा करते तो शायद भारत को लेकर उनकी बहुत सी राय बदल जाती। आज चे का जन्मदिन है। 14 जून 1928 को वो अर्जेंटीना में पैदा हुए थे। मानव को बंधन से आज़ाद कराने के लिए उन्होंने घर, पेशा और देश तक छोड़ दिए थे। आखिरकार अपने हिस्से की नौ गोलियां झेलकर वो मुक्त हो गया।

नितिन ठाकुर

हवाई हादसों की भयावह हकीकत और हमारी जिम्मेदारियां

@ अनुराग पाठक

विमान हादसे हमेशा केवल तकनीकी खामियों या मानवीय त्रुटियों की खबर नहीं होते, वे पूरे समाज के लिए सदमे, सवाल और संवेदनाओं का विषय होते हैं। जैसे ही कोई विमान दुर्घटना घटती है, तो सिर्फ आसमान में नहीं, धरती पर रहने वाले सैकड़ों परिवारों की ज़िंदगी पलभर में बदल जाती है। हाल ही में अहमदाबाद से लंदन जा रहे एयर इंडिया के विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने की घटना ने एक बार फिर हमें हिला कर रख दिया है। इस विमान में कुल 242 लोग सवार थे, जिनमें से 241 की मौत हो गई। यह हादसा इस दशक की सबसे भयावह घटनाओं में से एक बन गया है।

इस घटना की गूंज सिर्फ इसलिए नहीं कि इसमें सैकड़ों जानें गईं, बल्कि इसलिए भी कि इससे यह सवाल उठ खड़ा हुआ है कि आधुनिक तकनीक और सुरक्षा मानकों के दावे आखिर किस हद तक विश्वसनीय हैं। इस हादसे में बचा एकमात्र व्यक्ति एक चमत्कार के रूप में देखा जा रहा है, लेकिन इससे विमानन तंत्र की खामियां छिपाई नहीं जा सकतीं।

यह पहला मौका नहीं है जब भारत ने ऐसा दुखद हादसा देखा है। वर्ष 1996 में हरियाणा के चरखी-दादरी में सऊदी अरब और कज़ाकिस्तान की एयरलाइनों के बीच हुई हवा में टक्कर ने पूरी दुनिया को सकते में डाल दिया था। ग़लत कम्युनिकेशन और ऊंचाई की जानकारी को लेकर हुए भ्रम में 349 लोग मारे गए। यह दुर्घटना दुनिया की सबसे भयावह मिड-एयर कोलिज़न मानी जाती है।

उसी तरह 1978 में मुंबई से दुबई जा रहे एयर इंडिया के 'सम्राट अशोक' नामक विमान के समुद्र में गिरने से 213 लोगों की मौत हुई थी। ऐसे हादसे इस ओर संकेत करते हैं कि टेक्नोलॉजी और तैयारी कितनी भी उन्नत क्यों न हो, मानवीय त्रुटि और मौसम जैसी शक्तियाँ अब भी उसे मात दे सकती हैं।

मंगलुरु हवाई अड्डे पर 2010 में हुई दुर्घटना भी कम दिल दहला देने वाली नहीं थी। एक टेबलटॉप रनवे पर उतरते समय जब विमान समय पर नहीं रुक सका, तो वह गहरी खाई में जा गिरा और उसमें आग लग गई। 158 यात्री मारे गए, केवल आठ बच सके। ऐसे रनवे जिनके दोनों ओर खड़ी ढलानें होती हैं, उन पर लैंडिंग की विशेष व्यवस्था और सावधानी की ज़रूरत होती है।अहमदाबाद में 1988 में इंडियन एयरलाइंस का एक विमान भी कोहरे और कम विजिबिलिटी के चलते हादसे का शिकार हुआ, जिसमें 133 लोगों की जान चली गई। इसमें पायलट की सतर्कता ही काम नहीं आई क्योंकि रनवे दिखाई नहीं दे रहा था और रडार से समन्वय में चूक हो गई थी।

1976 में मुंबई से चेन्नई जा रहे विमान में आग लगने की घटना ने सभी 95 यात्रियों की जान ले ली। विमान ने दोबारा उतरने की कोशिश की, लेकिन रनवे तक पहुंचने से पहले ही क्रैश हो गया। हर हादसे में एक कॉमन पैटर्न दिखता है। तकनीकी समस्या, मानवीय निर्णय की चुनौती और कभी-कभी खराब मौसम। यदि हम विश्व पटल पर नजर डालें, तो 1977 में स्पेन के टेनेरिफ़ हवाई अड्डे पर दो बोइंग 747 विमानों के टकराने से हुई 583 लोगों की मौत आज भी विमानन इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी है। वहीं, क्यूबा एयरलाइंस की 1976 की उड़ान, जिसे आतंकवादियों ने निशाना बनाया, उसमें सवार सभी 73 लोग मारे गए थे।

11 सितंबर 2001 की घटना किसी को भूली नहीं है जब चार विमानों को आतंकवादियों ने हथियार बना कर हजारों लोगों की जान ले ली थी। इसमें अमेरिकन एयरलाइंस की उड़ान 11 ने वर्ल्ड ट्रेड सेंटर को टक्कर मारी, जिसमें 92 लोग मारे गए। यह घटना वैश्विक सुरक्षा के मायनों को हमेशा के लिए बदल गई। इन तमाम घटनाओं से एक बात स्पष्ट होती है कि तकनीक कभी भी इंसान की सुरक्षा की गारंटी नहीं बन सकती, जब तक उसके संचालन में संवेदनशीलता, अनुशासन और नियमित समीक्षा की भावना न हो। आज विमानन उद्योग को यह सोचने की ज़रूरत है कि क्या हमारा मौजूदा सुरक्षा ढांचा पर्याप्त है? क्या हर उड़ान से पहले मौसम, मशीन और मानव शक्ति की पूरी जांच की जाती है? क्या मौजूदा नियमों की पालना होती है या वह सिर्फ दस्तावेज़ों तक सीमित है?

भारत जैसे देश में, जहां धार्मिक पर्यटन, व्यवसाय और आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं के लिए हवाई यात्रा दिन पर दिन बढ़ रही है, वहां हवाई सुरक्षा को लेकर और भी ज़्यादा सतर्कता की आवश्यकता है। सरकारों, विमानन कंपनियों और नियामक संस्थाओं को सिर्फ रिपोर्ट तैयार कर देना पर्याप्त नहीं होगा। यह ज़रूरी है कि हर हादसे से सबक लिया जाए और उन्हें नीतियों में बदला जाए। यात्रियों की जान की कीमत आंकड़ों से कहीं अधिक है।

इन हादसों में हम सिर्फ नंबर नहीं खोते, हम इंसान खोते हैं। माँ-बाप, बच्चे, शिक्षक, डॉक्टर, मजदूर, और वो सपने जो उनकी आँखों में पल रहे होते हैं। जब कोई विमान नीचे गिरता है, तो उसके साथ टूटती हैं वो तमाम उम्मीदें, जो आसमान को छूने निकली थीं। इसलिए यह समय है सजग होने का, संकल्प लेने का कि विमानन सुरक्षा को अब प्राथमिकता दी जाए। जब तक हम हादसों को केवल 'घटना' मानते रहेंगे, तब तक 'सबक' केवल मौतें ही सिखाएंगी। अब समय आ गया है कि उड़ान केवल गति और सुविधा का प्रतीक न रहे, बल्कि विश्वास और सुरक्षा का भी नाम बने।

जुबानी तीर

'भाजपा की अंदरूनी राजनीति की शर्मनाक लड़ाई में, अब कौशांबी में दो भाजपाई उप मुख्यमंत्री, दो समाज के लोगों को आपस में लड़वा रहे हैं। पहले एक उप मुख्यमंत्री ने नाइंसाफी करते हुए 'पाल' समाज के लोगों को मोहरा बनाया, फिर दूसरे उप मुख्यमंत्री ने अपने उस समाज के नाम पर झूठी सहानुभूति दिखाई, जो समाज इन दोनों के 'ऊपरवालों' को नहीं भाता है, इसीलिए पीछे से वो भी सक्रिय हो गए। जिनकी पहलेवाले उप मुख्यमंत्री से पुरानी खींचातानी है। और फिर इन ऊपरवालों के ऊपरवालों की भी आपस में टकराहट है, इसीलिए केंद्रवाले, कौशांबी की राजनीति करनेवालों के साथ खड़े हैं।'

अखिलेश यादव
(सपा प्रमुख)

'हमारे लिए न कोई अगड़ा है, न पिछड़ा, न दलित- जो कानून तोड़ेगा, उसे सजा मिलेगी, चाहे वो कोई भी हो। अगर पुलिस भी गलती करती है, तो उस पर भी कार्रवाई होगी। उत्तर प्रदेश की 25 करोड़ जनता को न्याय और सुशासन देना हमारा संकल्प है- इसके लिए जातिवादी मानसिकता से ऊपर उठना जरूरी है। 'हम 'न्याय सभी के लिए, पक्षपात किसी से नहीं' की नीति पर चलते हैं- यही भाजपा की प्रतिबद्धता है। अखिलेश यादव जी, आप बार-बार समाज को जातियों में बांटकर राजनीति करना चाहते हैं, ताकि अपना वोटबैंक और सपा को सफा होने से बचा सकें। 'मौर्य', 'पाल', 'पासी', 'दलित' जैसे समाजों की चिंता नहीं, सिर्फ उनके नाम पर सिर्फ राजनीति करनी है।'

केशव प्रसाद मौर्य (डिप्टी सीएम)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच0टी0 मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित ।
संपादकः महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252; संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

बिच्छू के ज़हर पर भारी हैं ये आयुर्वेदिक उपाय

@ डॉ. महिमा मक्कर

गर्मी और बरसात के मौसम में खेतों, बगीचों, पुराने मकानों या लकड़ियों के ढेर में बिच्छुओं का मिलना आम बात है। इनसे काटे जाने की घटनाएं ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा होती हैं। बिच्छू के डंक से दर्द असहनीय हो सकता है, पर घबराने की जरूरत नहीं। यदि समय रहते सही कदम उठाए जाएं, तो यह स्थिति आसानी से काबू में लाई जा सकती है। आयुर्वेद में बिच्छू के डंक का प्रभावशाली इलाज बताया गया है, जो न केवल दर्द कम करता है, बल्कि विष का असर भी रोकता है।

बिच्छू के डंक के लक्षण

बिच्छू का जहर न्यूरोटॉक्सिक होता है, यानी यह नसों को प्रभावित करता है। डंक लगने के तुरंत बाद व्यक्ति को डंक वाली जगह पर तेज जलन और सूजन महसूस होती है। इसके अलावां झनझनाहट या सुन्नपन,पसीना आना,घबराहट और बेचैनी,तेज सिरदर्द,कभी-कभी हल्का बुखार या उल्टी भी आ सकती है। अगर डंक विषैला हो तो ये लक्षण गंभीर हो सकते हैं, इसलिए तुरंत प्राथमिक उपचार करना आवश्यक होता है।

कौन से आयुर्वेदिक उपचार होते हैं प्रभावी ?

बिच्छू के डंक के तुरंत बाद डंक वाली जगह को साबुन से धोएं।पहले चरण में उस स्थान को हल्के गुनगुने पानी और साबुन से साफ करें, ताकि संक्रमण न फैले और विष फैलने की गति कम हो जाए।

नीम के पत्तों का लेप करें

नीम के पत्तों को पीसकर उसका पेस्ट बनाएं और डंक वाली जगह पर लगाएं। नीम में जैविक विषनाशक गुण होते हैं, जो बिच्छू के जहर को बेअसर कर सकते हैं।

हल्दी और पानी का लेप भी किया जा सकता है

हल्दी में एंटीसेप्टिक और सूजन कम करने वाले गुण होते हैं। एक चम्मच हल्दी को पानी के साथ मिलाकर पेस्ट बना लें और डंक पर लगाएं। यह दर्द और जलन दोनों को कम करता है।

कुछ और प्रभावी आयुर्वेदिक उपचार

सरसों का तेल और लहसुन- दो चम्मच सरसों के तेल में 4-5 लहसुन की कलियाँ डालकर गर्म करें। जब लहसुन सुनहरा हो जाए, तो तेल को ठंडा कर डंक वाली जगह पर मालिश करें। लहसुन में विषहर (antitoxic) और दर्दनिवारक गुण होते हैं।

तुलसी और अदरक का रस- तुलसी की पत्तियाँ

और अदरक का छोटा टुकड़ा लेकर रस निकालें और दो-दो बूँद डंक वाली जगह पर लगाएँ। चाहें तो एक चम्मच रस पीने को भी दे सकते हैं – यह शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को सक्रिय करता है।

अर्जुन छाल का काढ़ा- अर्जुन की छाल का काढ़ा बनाकर दिन में दो बार पिलाने से शरीर में विष का प्रभाव कम होता है और हृदय की गति सामान्य रहती है।

घरेलू उपाय जो राहत दें

प्याज का रस- प्याज को काटकर उसका रस निकालें और डंक पर लगाएं। प्याज की ठंडक जलन को शांत करती है और सूजन को कम करती है।

पान के पत्ते का प्रयोग- पान के पत्ते को गर्म करें और उस पर थोड़ा सा सरसों का तेल लगाकर डंक की जगह पर बाँध दें। यह पारंपरिक उपाय विष के प्रभाव को रोकने में मदद करता है।

एलोवेरा जेल- एलोवेरा की ताजगी डंक की जलन को कम करने में उपयोगी है। डंक वाली जगह पर जेल लगाएँ, यह त्वचा को राहत देगा।

क्या नहीं करना चाहिए ?

डंक वाली जगह को ज्यादा दबाएं या छेड़ें नहीं। डंक वाली जगह पर कोई धारदार वस्तु से चीरा न लगाएं। बर्फ सीधे न लगाएं, इससे रक्तसंचार धीमा हो सकता है। पीड़ित व्यक्ति को अकेला न छोड़ें। गंभीर स्थिति में डॉक्टर की सलाह ज़रूर लें

डॉक्टर के पास कब जाएँ ?

यदि बिच्छू का डंक लगने के 30 मिनट के अंदर लक्षण तेजी से बढ़ें जैसे कि सांस लेने में कठिनाई,शरीर सुन्न पड़ने लगे,बेहोशी या झटके आएं,खूनचाप (BP) बहुत कम हो जाए तो तुरंत नज़दीकी स्वास्थ्य केंद्र या अस्पताल ले जाएं। आयुर्वेदिक उपचार के साथ-साथ मेडिकल देखभाल भी ज़रूरी हो सकती है।

आयुर्वेद में बिच्छू के डंक को क्या कहा गया है ?

आयुर्वेदिक ग्रंथों में बिच्छू के डंक को "कृमि विष", "दंश विष" आदि नामों से जाना जाता है। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में इसके लिए विशेष जड़ी-बूटियों और औषधियों का उल्लेख है। बिच्छू का डंक जरूर भयावह होता है, लेकिन यदि समय पर आयुर्वेदिक उपाय अपनाए जाएं, तो इसका असर बहुत हद तक रोका जा सकता है। घर पर उपलब्ध सामान्य चीज़ों जैसे नीम, लहसुन, प्याज, हल्दी, सरसों का तेल आदि से भी बड़ा असर संभव है।साथ ही, हमें यह समझना चाहिए कि हर विष में शक्ति होती है, लेकिन हर प्राकृतिक उपाय में भी प्रतिरोधक शक्ति होती है। आयुर्वेद न केवल शरीर, बल्कि मन को भी शांत करता है इसलिए ऐसी आपात स्थितियों में घबराने की बजाय शांति और विश्वास के साथ उपचार करना चाहिए।

संत दरिया साहबः प्रेम और भक्ति का प्रकाश

बिहार की पवित्र धरती पर, जब चारों ओर अशांति और उथल-पुथल थी, तब संत दरिया साहब का जन्म हुआ, जिनका जीवन प्रभु के प्रेम और ज्ञान का दीपक बन गया। वे संत कबीर की निर्गुण भक्ति से गहरे प्रभावित थे और प्रभु को निरंजन, प्रियतम और सतपुरुष के रूप में पूजते थे। उनका जीवन सादगी और भक्ति का अनुपम उदाहरण है, जो आज भी लाखों भक्तों के लिए प्रेरणा है।

उनके समय में मुगल सत्ता कमजोर हो रही थी, औरंगजेब की कठोर नीतियों से लोग परेशान थे, और बंगाल-बिहार में अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ रहा था। ऐसे कठिन समय में संत दरिया साहब ने शांति और प्रेम से संतमत का प्रचार किया। उन्होंने लोगों को सत्य की राह दिखाई और प्रभु के प्रेम में डुबो दिया।

जन्म और बचपन की दिव्य कथाएँ

संत दरिया साहब का जन्म बिहार के आरा जिले के धरकंधा गाँव में विक्रम संवत 1691 (या 1731) की कार्तिक पूर्णिमा को हुआ। उनके पूर्वज उज्जैन के क्षत्रिय थे, जो मालवा से बिहार के जगदीशपुर आए। उनके पिता का नाम पथुदव सिंह था, जिन्होंने बाद में इस्लाम स्वीकार कर पीरनशाह नाम लिया। उनकी माँ प्रभु की सच्ची भक्त थीं, जिनके संस्कारों ने दरिया के हृदय में भक्ति का बीज बोया।

जन्म के एक महीने बाद एक चमत्कार हुआ। एक सतगुरु ने दर्शन देकर उन्हें दरियाशाह या दरियादास नाम दिया और कहा कि वे कबीर के अवतार हैं। यह घटना उनके दिव्य जीवन की शुरुआत थी। नौ साल की उम्र में उनका विवाह हुआ, पर उनका मन संसार में नहीं रमा। वे हमेशा एकांत में बैठकर आत्मा और परमात्मा का चिंतन करते।

वैराग्य और भक्ति का मार्ग

पंद्रह साल की उम्र में संत दरिया साहब ने वैराग्य ले लिया। संसार की चीजें उनके लिए बेमानी थीं। पाँच साल की तपस्या के बाद, बीस साल की उम्र में उनमें महान संत के लक्षण दिखने लगे। उनकी ख्याति फैली, और बड़े-बड़े संत उनके सत्संग में आने लगे। तीस साल की उम्र में उन्होंने संतमत की गद्दी संभाली और शिष्यों को प्रभु की राह दिखाई।

उनके पद और साखियाँ उनके अनुभवों की सुगंध से भरे थे। उनकी साधना दिन-ब-दिन गहरी होती गई। बिहार के सूबेदार नवाब मीर कासिम उनके भक्त थे और उन्होंने धरकंधा में 101 बीघा जमीन दी। संत दरिया गृहस्थ रहे, पर अखंड ब्रह्मचर्य का पालन किया। उनके धर्म-पुत्र टेकदास ने उनकी परंपरा को आगे बढ़ाया।

तीर्थयात्रा और सत्संग

संत दरिया साहब का हृदय प्रभु का मंदिर था। वे मगहर, काशी और बैसी (गाजीपुर) जैसे पवित्र स्थानों पर गए, जहाँ सत्संग कर लोगों को प्रभु भक्ति का मार्ग बताया। उनके लिए तीर्थयात्रा का अर्थ था संतों की तपोभूमि के दर्शन और भक्तों को संसार की नश्वरता समझाना। उनके सत्संग में प्रभु का प्रेम बहता था, जो हर दिल को छू लेता था।

छप लोकः प्रभु का अमर धाम

संत दरिया साहब ने संत कबीर के सतलोक को छप लोक, अमरपुर या अभय लोक कहा। यह वह दिव्य धाम है, जहाँ सतपुरुष का वास है। वे कहते थे, "अति सुख पावहि हंसा, करहि को ताहल जाय। छप लोक अमृत पिये, जुग जुग छुधा बुझाय।"

(आत्मा को असीम सुख मिलता है, छप लोक में अमृत पीकर युगों की प्यास बुझती है।) यह लोक जीव के भीतर ही है, जिसे प्रेम और साधना से पाया जा सकता है।

उन्होंने सिखाया, "खोजो जीव, ब्रह्म मिलि जाई।" (आत्मा में खोजो, प्रभु मिल जाएंगे।) उनकी वाणी में प्रभु के प्रति गहरा प्रेम झलकता था। वे कहते, "हंस नाम अमृत नहि चाखे, नहि पाये पैसार। कह दरिया जग अरुझेव, इक नाम बिना संसार।" (बिना नाम के अमृत के, संसार में शांति नहीं।)

कबीर के प्रति श्रद्धा

संत दरिया साहब कबीर के परम भक्त थे। उन्होंने कहा, "सोड कहो जो कहहि कबीरा, दरियादास पद पायो हीरा।" (कबीर जो कहते हैं, वही कहता हूँ, दरियादास को अनमोल रत्न मिला।) कबीर का मार्ग ही उनका मार्ग था। सतनामी, कबीर पंथ और सूफी साधना का प्रभाव उनकी भक्ति में दिखता था। प्रेम ही प्रभु तक पहुँचने का रास्ता है, यह उनकी सीख थी।

साहित्यः भक्ति का अमृत

संत दरिया साहब ने हिंदी में कई ग्रंथ लिखे, जिनमें ज्ञान स्वरोदय, प्रेममूल, दरियासागर, भक्तिहेत, ज्ञान रतन, विवेकसागर, ज्ञान दीपक, ब्रहवविवक, दरियानामा, निर्भय ज्ञान, अमरसार, बीजक, सत्सई और कालचरित्र शामिल हैं। इन रचनाओं में भक्ति और ज्ञान का समन्वय है। उनकी वाणी सीधी और हृदय को छूने वाली है।

वे कहते थे कि प्रभु परम ज्योति हैं, जिनका दर्शन प्रेम से मिलता है। उनकी रचनाएँ आज भी भक्तों को प्रभु के करीब लाती हैं। संत दरिया साहब का जीवन प्रेम, भक्ति और सादगी का संदेश है। गृहस्थ रहकर भी उन्होंने ब्रह्मचर्य और साधना का पालन किया। उनकी वाणी अनुभव से भरी है, जो हर भक्त को प्रभु के छप लोक की ओर ले जाती है। आज भी वे अपने भक्तों के हृदय में बस्ते हैं, कहते हुए, "हे जीव, प्रभु को प्रेम से खोज, वही तेरा सच्चा ठिकाना है।"

जंगल का इंटरनेटः पेड़ों की गुप्त दुनिया

क्या आपने कभी सोचा कि जंगल में पेड़ एक-दूसरे से बात करते हैं? नहीं, ये कोई फंतासी मूवी की कहानी नहीं है। पेड़ सचमुच एक गुप्त नेटवर्क के जरिए जुड़े हैं, जिसे वैज्ञानिक "वुड वाइड वेब" कहते हैं। ये नेटवर्क मिट्टी के नीचे काम करता है, जैसे कोई अनदेखा इंटरनेट। पेड़ इसके जरिए खाना, पानी, और खतरे की खबरें शेयर करते हैं। लेकिन हमारी गतिविधियाँ, जैसे जंगल काटना और केमिकल्स का इस्तेमाल, इस नेटवर्क को नुकसान पहुँचा रही हैं। आइए, इस अद्भुत दुनिया में गोता लगाएँ और समझें कि पेड़ों की ये गुप्त बातचीत कैसे काम करती है, और हम इसे कैसे बचा सकते हैं।

वुड वाइड वेबः पेड़ों का सोशल मीडिया

जंगल की मिट्टी के नीचे एक छिपा हुआ नेटवर्क है, जो पेड़ों को जोड़ता है। इसे वुड वाइड वेब कहते हैं, जैसे जंगल का अपना इंटरनेट। इसकी खोज 1997 में वैज्ञानिक सुज़ैन सिमार्ड ने की थी। लेकिन ये नेटवर्क कैसे काम करता है?

पेड़ों की जड़ें और फंगी (कवक) मिलकर ये नेटवर्क बनाते हैं। फंगी की पतली-पतली तारें, जिन्हें हाइफी कहते हैं, पेड़ों की जड़ों से जुड़ती हैं। ये तारें मिट्टी में दूर-दूर तक फैलती हैं, जैसे फाइबर ऑप्टिक केबल। इनके जरिए पेड़ एक-दूसरे को शुगर, पानी, और पोषक तत्व भेजते हैं। 2024 में क्राउदर लैब की स्टडी ने बताया कि ये नेटवर्क पूरी दुनिया के जंगलों में है, और ये कार्बन स्टोर करने में भी मदद करता है।

सोचिए, जैसे हम व्हाट्सएप पर मैसेज भेजते हैं, वैसे ही पेड़ इस नेटवर्क से खबरें और खाना शेयर करते हैं। मिसाल के तौर पर, अगर कोई पेड़ कीड़े से परेशान है, तो वो दूसरों को सिग्नल भेजता है, और बाकी पेड़ अपने केमिकल डिफेंस को तैयार करते हैं। X पर 12 जून 2025 को एक पोस्ट में लिखा था, "पेड़ अपने दोस्तों को खतरे की खबर देते हैं, जैसे कोई ग्रुप चैट!" ये सुनने में जादुई लगता है, पर ये विज्ञान है।

शुगर की मददः पेड़ों का दोस्ताना अंदाज़

क्या होगा अगर जंगल में किसी पेड़ को सूरज की रोशनी न मिले? क्या पास के पेड़ उसकी मदद कर सकते हैं? जवाब है—हाँ! पेड़ अपने अतिरिक्त शुगर को वुड वाइड वेब के जरिए शेयर करते हैं, जैसे कोई दोस्त खाना बाँटता है।

जब पेड़ सूरज की रोशनी से शुगर बनाते हैं, तो वो इसे फंगी को देते हैं। फंगी बदले में पानी और पोषक तत्व, जैसे फॉस्फोरस, लौटाते हैं। अगर कोई छोटा पेड़ या सैपलिंग छाया में है, तो बड़े पेड़ उसे शुगर भेज सकते हैं। 2023 की एक स्टडी (कम्युनिकेशन्स बायोलॉजी) में पाया गया कि कनाडा के जंगलों में डगलस फर और पेपर बर्च पेड़ मौसम के हिसाब से शुगर शेयर करते हैं। सर्दियों में बर्च को फर से शुगर मिलता है, और गर्मियों में बर्च लौटाता है।

खास बात ये है कि बड़े, पुराने पेड़, जिन्हें "मदर ट्री" कहते हैं, छोटे पेड़ों की खास देखभाल करते हैं। 2025 में नेशनल जियोग्राफिक ने बताया कि मदर ट्री अपने बच्चों को शुगर भेजती हैं, जैसे माँ अपने बच्चों को खाना देती है। और भी मजेदार बात—2025 की प्लांट सिग्नलिंग एंड बिहेवियर स्टडी में पाया गया कि पेड़ इलेक्ट्रिक सिग्नल्स (0.3 इंच प्रति सेकंड की स्पीड से) भेजते हैं, जो बताते हैं कि किसे शुगर चाहिए।

लेकिन कुछ वैज्ञानिक कहते हैं कि ये "हेल्प" इतनी निस्वार्थ नहीं। 2023 की नेचर इकोलॉजी एंड एवोलुशन स्टडी के मुताबिक, फंगी शायद अपने फायदे के लिए शुगर ले-दे रहे हैं। फिर भी, ये साफ है कि पेड़ एक-दूसरे की मदद करते हैं, और ये नेटवर्क जंगल को जिंदा रखता है।

पेड़ों की सोशल इंटेलिजेंसः जंगल का परिवार

पेड़ सिर्फ खड़े नहीं रहते; वो एक परिवार की तरह बर्ताव करते हैं। वुड वाइड वेब के जरिए वो खाना, पानी, और खतरे की खबरें शेयर करते हैं। ये उनकी "सोशल इंटेलिजेंस" है, जैसे कोई कम्युनिटी एक-दूसरे का ख्याल रखती है।

मिसाल के तौर पर, अगर किसी पेड़ पर कीड़े हमला करते हैं, तो वो केमिकल सिग्नल भेजता है। पास के पेड़ इसे पकड़ते हैं और अपने डिफेंस तैयार करते हैं, जैसे टैनिन या सैलिसिलिक एसिड बनाना। X पर 11 जून 2025 की पोस्ट में लिखा था, "पेड़ एक-दूसरे की केयर करते हैं, जैसे दोस्त!" मदर ट्री खासतौर पर छोटे पेड़ों को फंगी से जोड़ती हैं, ताकि वो नेटवर्क का हिस्सा बनें।

लेकिन क्या ये सचमुच इंटेलिजेंस है? कुछ वैज्ञानिक, जैसे 2023 की नेचर इकोलॉजी एंड एवोलुशन स्टडी में, कहते हैं कि ये सिर्फ बायोलॉजिकल प्रोसेस है, न कि जानबूझकर मदद। फिर भी, ये बात पक्की है कि पेड़ शुगर और सिग्नल्स शेयर करते हैं। ये ऐसा है जैसे जंगल में हर पेड़ एक-दूसरे का सपोर्ट सिस्टम हो। सोचिए, अगर हम इंसान भी इतना ख्याल रखें तो दुनिया कितनी खूबसूरत होगी।

इंसान का दखलः नेटवर्क पर खतरा

जंगल का ये गुप्त नेटवर्क कितना भी मजबूत हो, हमारी गतिविधियाँ इसे तोड़ रही हैं। जंगल काटना, मिट्टी की खुदाई, और केमिकल्स का इस्तेमाल इस नेटवर्क को भारी नुकसान पहुँचा रहे हैं।

जंगल काटनाः जब हम पेड़ काटते हैं, तो फंगी की तारें टूट जाती हैं, जैसे फोन लाइन कट जाए। 2023 की बोस्टन यूनिवर्सिटी की स्टडी कहती है कि जंगल के किनारे, जहाँ कटाई होती है, वहाँ 50% कम फंगी बचते हैं। इससे पेड़ों का कनेक्शन टूटता है, और कार्बन स्टोरेज 20–30% कम हो जाता है । खास बात—2024 की नेचर स्टडी ने बताया कि आग और कटाई मिलकर दक्षिणी जंगलों में ग्लोमेलिन (फंगी का गोंद) को खत्म कर देते हैं, जिससे मिट्टी कमजोर हो जाती है।

मिट्टी की खुदाईः बुलडोजर से मिट्टी खोदने से हाइफी टूट जाती हैं। 2024 की सॉयल बायोलॉजी एंड बायोकेमिस्ट्री स्टडी के मुताबिक, खुदाई से 40% फंगी कम हो जाते हैं। शहरों में, जहाँ सड़कें बनती हैं, पेड़ इस नेटवर्क से कट जाते हैं । मिट्टी का ऊपरी हिस्सा, जहाँ फंगी रहते हैं, हटने से जंगल की रिकवरी रुक जाती है।

केमिकल्स का इस्तेमालः कीटनाशक और फर्टिलाइजर फंगी को मारते हैं। 2024 की साइंस डायरेक्ट स्टडी कहती है कि खेतों में केमिकल्स से पास के जंगल में 25% फंगी कम हो जाते हैं। 2025 की स्टडी ने पाया कि जिंक और कॉपर जैसे केमिकल्स फंगी को ज़हर देते हैं, जिससे पेड़ों का ग्रोथ 15% कम होता है।

2025 की नेचर स्टडी ने चेतावनी दी कि जलवायु परिवर्तन इन नुकसानों को और बढ़ा रहा है। सूखे से पेड़ कम शुगर बनाते हैं, जिससे फंगी कमज़ोर होते हैं। ये सब मिलकर जंगल की आवाज़ को चुप कर रहे हैं।

इसे बचाना क्यों ज़रूरी है?

वुड वाइड वेब सिर्फ पेड़ों की कहानी नहीं; ये हमारी धरती की सेहत की कहानी है। ये नेटवर्क कार्बन स्टोर करता है, जो क्लाइमेट चेंज से लड़ने में मदद करता है। ये जैव विविधता को बढ़ाता है और जंगल को मजबूत रखता है। लेकिन अगर हम इसे नुकसान पहुँचाते रहे, तो जंगल कमजोर हो जाएँगे, और हमारा पर्यावरण भी।

2025 में सोसाइटी फॉर द प्रोटेक्शन ऑफ अंडरग्राउंड नेटवर्क्स (SPUN) ने बताया कि फंगी डालकर नए पेड़ों का ग्रोथ 20% बढ़ सकता है। हम क्या कर सकते हैं? जंगल काटना कम करें, केमिकल्स का यूज़ घटाएँ, और अपने गार्डन में native पेड़ लगाएँ। X पर 2025 की एक पोस्ट में लिखा था, "जंगल का नेटवर्क बचाओ, धरती को बचाओ!"

सोचिए, अगर हम इस नेटवर्क को बचा लें, तो हम न सिर्फ पेड़ों को, बल्कि अपने बच्चों के लिए एक हरी-भरी दुनिया को बचा रहे हैं। अगली बार जब आप जंगल में जाएँ, ज़रा रुककर मिट्टी को देखिए। वहाँ, नीचे, एक गुप्त दुनिया है, जो चुपके से हमें जिंदगी दे रही है। क्या हम उसका ख्याल रखेंगे?

संगीत है अध्यात्म का श्रेष्ठ माध्यम

संगीत आत्मा को छू लेने वाला एक ऐसा दिव्य माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य ईश्वर से सीधा जुड़ सकता है। संगीत का वास्तविक आनंद तभी संभव है जब श्रोता पूर्ण समर्पण भाव के साथ उसे ग्रहण करें। एक प्रसंग में बताया गया है कि एक बार सम्राट अकबर के दरबार में एक महान संगीतज्ञ आया। उसने गाने से पहले एक शर्त रखी, जो भी उसकी प्रस्तुति के दौरान अपनी गर्दन हिलाएगा, उसका सिर कलम कर दिया जाएगा। जब संगीत आरंभ हुआ, तो भयवश कुछ लोग उठकर चले गए और कुछ तलवारधारी सैनिक को देखकर भाग गए। अंत में कुछ ही लोग रह गए। तब संगीतज्ञ बोला, "अब मैं गाऊंगा। ये श्रोता संगीत को समझते हैं। ये झूमेंगे भी, इनकी गर्दनें भी हिलेंगी, किंतु ये भाव में डूबे हुए होंगे।" यह प्रसंग यह स्पष्ट करता है कि संगीत केवल ध्वनि नहीं है, वह एक साधना है, एक तपस्या है। वृंदावन के वनों में आज भी अनेक संत रागों के माध्यम से श्रीकृष्ण और राधा रानी की स्तुति करते हैं। समयानुसार वे भिन्न-भिन्न रागों का गायन करते हैं, जिससे वहां की वायु में एक अपूर्व शांति और दिव्यता अनुभव होती है। जब भी लेखक वहां जाता है, तो उस वातावरण से इतना अभिभूत होता है कि लौटने का मन नहीं करता। कल-कल बहती नदी के किनारे, जब राग गूंजते हैं, तो वहां का समूचा वातावरण किसी दिव्य लोक सा प्रतीत होता है और एक अनिर्वचनीय आभा से भर जाता है।

महाब्रह्म है सृष्टि का प्रारंभिक स्रोत

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी के अनुसार, इस सृष्टि की उत्पत्ति में 'महाब्रह्म' की प्रमुख भूमिका रही है। वह इस सृष्टि का प्रारंभिक और परम तत्व था, जिसका आरंभिक काल में किसी को ज्ञान नहीं था। बाद में मां दुर्गा ने महाब्रह्मर्षियों को यह रहस्योद्घाटन किया। यह ज्ञान साधारण बुद्धि से परे, चित्त और मन से भी अतीन्द्रिय है।

सद्गुरुदेव जी समझाते हैं कि

जितना अधिक अहंकार होता है, उतनी ही परमात्मा से दूरी बनती है।

जितनी अधिक विनम्रता, प्रेम और भक्ति होती है, उतनी ही परमात्मा के निकटता मिलती है।

धरती पर जन्म लेना एक दंड के रूप में भी देखा गया है। देवलोक में जब दंड सुनाया जाता है, तो प्राणी को सर्प, स्त्री या पशु की योनियों में जन्म लेना पड़ता है। यहां तक कि जो विशेष रूप से ज्ञानवान आत्माएं होती हैं, यदि वे भ्रम में पड़ जाएं, तो उन्हें भी मानव रूप में जन्म लेकर दुख भोगना पड़ता है।महाब्रह्म ने ही चंद्रमा, सूर्य, तारे और पृथ्वी का निर्माण किया। मां दुर्गा की सृजनशक्ति इतनी विशाल और अद्भुत है कि वह एक क्षण में असंख्य ग्रहों और लोकों की रचना कर सकती हैं। आधुनिक विज्ञान भी यह मानता है कि अंतरिक्ष में लगातार अनगिनत ग्रह और नक्षत्र बनते-बिगड़ते रहते हैं।

वर्तमान समय की सच्चाई

जहां आधुनिक मानव चांद और मंगल तक पहुंचने की योजना बना रहा है, वहीं दूसरी ओर प्रकृति में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। मां दुर्गा अनवरत जीवों का सृजन कर रही हैं, लेकिन मृत्यु भी उसी अनुपात में हो रही है। फिर भी जीवों की संख्या इतनी अधिक हो गई है कि धरती पर रहने की जगह कम पड़ रही है।कीटाणुओं की भरमार, वायरल और फंगल संक्रमण से मनुष्य स्वयं संकट में है। लेखक बताता है कि जब वे ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड गए, तो देखा कि वहां के अधिकांश बच्चे और स्त्रियां मानसिक तनाव व विचित्र रोगों से ग्रसित हैं। यह स्थिति इस ओर संकेत करती है कि हमारी जीवनशैली और प्रकृति के बीच समरसता नहीं रह गई है।संगीत, अध्यात्म और ब्रह्मांड की ये सभी बातें एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं। जब हम अहंकार त्याग कर प्रेम, श्रद्धा और समर्पण से जीवन जीते हैं, तब हम इस सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को समझने के योग्य बनते हैं। संगीत इस मार्ग में एक सुगम साधन बनकर हमें ईश्वर की निकटता का अनुभव कराता है।

दिव्य बीज मंत्रों से मिला चमत्कारी स्वास्थ्य लाभ

हृदय रोग से पूर्ण मुक्ति

विजय पाल सिंह तंवर, भिवानी (हरियाणा)

एक दिन अचानक ब्लड प्रेशर गिरने से हालत गंभीर हो गई। पहले भिवानी में भर्ती किया गया, फिर गुड़गांव के आर्टेमिस अस्पताल में। डॉक्टरों ने हृदय संबंधी गंभीर स्थिति बताई। लेकिन अस्पताल में ही मैंने परम पूज्य सद्गुरुदेव जी के दिव्य बीज मंत्रों का निरंतर पाठ किया। चमत्कारी रूप से एंजियोग्राफी रिपोर्ट सामान्य आई, और मैं पूर्णतः स्वस्थ हो गया। डॉक्टर भी हैरान थे।

दूध की एलर्जी से छुटकारा

भास्कर पाल, यमुनानगर (हरियाणा)

कई वर्षों से दूध से एलर्जी थी। अनेक अस्पतालों में इलाज कराया, लेकिन कोई लाभ नहीं मिला। जब दिव्य बीज मंत्रों और अभिमंत्रित औषधि के बारे में जाना, तो नियमित साधना शुरू की। कुछ ही समय में एलर्जी पूरी तरह समाप्त हो गई। अब बिना किसी डर के दूध पीता हूँ। यह सचमुच एक ईश्वरीय कृपा है।

असाध्य त्वचा रोग से राहत

मीना, बालाघाट (मध्य प्रदेश)

गंभीर त्वचा रोग से वर्षों से पीड़ित थी। निजी अंगों में दाद और खाज की समस्या ने जीवन दूभर कर दिया था। डॉक्टरी इलाज से केवल अस्थायी राहत मिलती थी। सद्गुरुदेव जी द्वारा प्रदत्त दिव्य बीज मंत्रों का नियमित पाठ किया और चमत्कारिक रूप से रोग जड़ से समाप्त हो गया। अब मैं पूरी तरह स्वस्थ हूँ।

ब्रेस्ट कैंसर से चमत्कारी बचाव

मुकेश कुमार झा, रोहिणी (दिल्ली)

मेरी बहन को स्तन कैंसर हो गया था, और बीमारी शरीर में फैलने लगी थी। हम टाटा अस्पताल पहुँचे, लेकिन उम्मीदें कमजोर थीं। इस कठिन समय में दिव्य बीज मंत्रों की शरण ली। कुछ ही समय में चमत्कार हुआ। गांठ का आकार घट गया और बाद की रिपोर्ट में कैंसर नहीं मिला। आज मेरी बहन स्वस्थ है और हम सद्गुरुदेव जी की कृपा के लिए सदा आभारी हैं।

कठिन पेपर, गिरा कटऑफ लेकिन महेश ने रच दिया इतिहास

@ रिंकू विश्वकर्मा

नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (NTA) ने 14 जून 2025 को NEET UG 2025 के परिणाम घोषित किए। इस वर्ष कुल 20.8 लाख उम्मीदवारों ने परीक्षा दी, जिनमें से 12.36 लाख ने सफलता प्राप्त की। राजस्थान के हनुमानगढ़ निवासी महेश केसवानी ने 720 में से 686 अंक प्राप्त कर ऑल इंडिया रैंक (AIR) 1 हासिल किया। दिल्ली की अविका अग्रवाल ने फीमेल कैटेगरी में पहला स्थान प्राप्त किया और AIR 5 में रहीं।

टॉपर्स की सूची

AIR 1: महेश केसवानी (राजस्थान) – 686/720

AIR 2: उत्कर्ष अवधिया (इंदौर, मध्य प्रदेश)

AIR 3: कृषांग जोशी (महाराष्ट्र)

AIR 5: अविका अग्रवाल (दिल्ली) – फीमेल कैटेगरी में प्रथम

कट-ऑफ में आई गिरावट

इस वर्ष अनारक्षित श्रेणी के लिए कट-ऑफ 144 अंक रहा, जबकि पिछले वर्ष यह 162 अंक था। इस गिरावट का मुख्य कारण पेपर की कठिनाई स्तर में वृद्धि को माना जा रहा है। इंदौर के परीक्षा केंद्रों पर 75 उम्मीदवारों ने शिकायत की थी कि 4 मई को आंधी-तूफान और बिजली की कटौती के कारण उनकी परीक्षा प्रभावित हुई। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने इन याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए NTA को निर्देश दिया कि इन 75 उम्मीदवारों का परिणाम बाद में घोषित किया जाएगा। भारत में MBBS के लिए कुल 1,18,190 सीटें उपलब्ध हैं। इनमें से 55,688 सीटें सरकारी मेडिकल कॉलेजों में हैं, जो NEET UG 2025 के माध्यम से भरी जाएंगी। काउंसलिंग प्रक्रिया जल्द ही शुरू होगी, जिसमें उम्मीदवारों को All India Quota (AIQ) और राज्य कोटा के आधार पर सीटें आवंटित की जाएंगी।

भारत के टॉप 15 मेडिकल कॉलेज

1. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), दिल्ली
2. पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, चंडीगढ़
3. क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज (सीएमसी), वेल्लोर, तमिलनाडु
4. राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य और तंत्रिका विज्ञान संस्थान (निमहंस), बेंगलुरु, कर्नाटक
5. जवाहरलाल इंस्टीट्यूट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च (जेआईपीएमईआर), पुडुचेरी
6. संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
7. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू), वाराणसी, उत्तर प्रदेश
8. अमृता विश्व विद्यापीठम, कोयंबटूर, तमिलनाडु
9. कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज, मणिपाल, कर्नाटक
10. मद्रास मेडिकल कॉलेज और गवर्नमेंट जनरल हॉस्पिटल, चेन्नई, तमिलनाडु
11. डॉ. डी. वाई. पाटिल विद्यापीठ, पुणे, महाराष्ट्र
12. सविता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एंड टेक्निकल साइंसेज, चेन्नई, तमिलनाडु
13. श्री चित्रा तिरुनल इंस्टीट्यूट फॉर मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी, तिरुवनंतपुरम, केरल
14. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), ऋषिकेश, उत्तराखंड
15. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), भुवनेश्वर, ओडिशा

काउंसलिंग प्रक्रिया जल्द होगी शुरू

काउंसलिंग प्रक्रिया Medical Counselling Committee (MCC) द्वारा आयोजित की जाएगी। उम्मीदवारों को MCC की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर पंजीकरण करना होगा। आवश्यक दस्तावेजों में NEET UG 2025 स्कोरकार्ड, पहचान पत्र, और श्रेणी प्रमाणपत्र शामिल हैं। काउंसलिंग प्रक्रिया में सीट आवंटन उम्मीदवारों की रैंक, श्रेणी, और प्राथमिकताओं के आधार पर किया जाएगा।

रेयर अर्थ एलिमेंट्सः एक छोटी सी कीमती धरती का बड़ा खेल

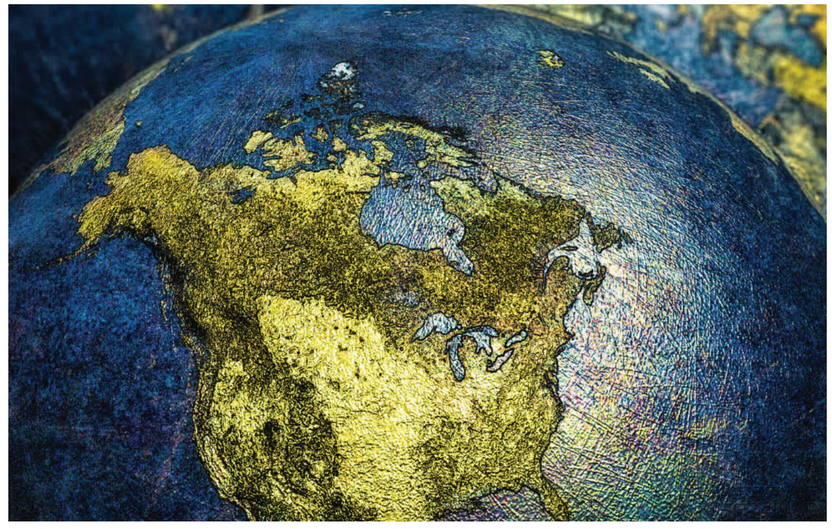

आपके स्मार्टफोन, इलेक्ट्रिक गाड़ी, या हवा से बिजली बनाने वाली पवन चक्की में क्या कॉमन है? जवाब है रेयर अर्थ एलिमेंट्स (REEs) – 17 खास धातुएँ जो हमारी जिंदगी को चमकदार और आसान बनाती हैं। लेकिन इन धातुओं का खेल छोटा नहीं है। ये दुनिया की बड़ी ताकतों – अमेरिका और चीन – के बीच जंग का मैदान बन चुका है। भारत भी इस खेल में फंस गया है, क्योंकि हमारी गाड़ियाँ, गैजेट्स, और हथियार इनके बिना अधूरे हैं। आइए, इस कहानी को समझें – कैसे चीन ने इस धरती की धातुओं पर कब्जा किया, भारत पर इसका क्या असर हो रहा है, और ये धातुएँ इतनी जरूरी क्यों हैं।

रेयर अर्थः छोटी धातु, बड़ा दम

रेयर अर्थ एलिमेंट्स, जैसे नियोडिमियम, डिस्प्रोसियम, और सेमेरियम, सुनने में तो अजीब लगते हैं, लेकिन ये हमारी दुनिया के सुपरहीरो हैं। ये धातुएँ छोटी-छोटी चीजों में बड़ा कमाल करती हैं। आपके फोन की स्क्रीन, इलेक्ट्रिक गाड़ी का मोटर, या सेना के मिसाइल सिस्टम – सबमें ये धातुएँ होती हैं। ये मैग्नेट बनाती हैं जो हल्के, ताकतवर, और जादुई होते हैं।

कहाँ काम आते हैं? स्मार्टफोन, लैपटॉप, विंड टर्बाइन, सोलर पैनल, और MRI मशीनें इनके बिना रुक जाएँगी।

क्यों मुश्किल? इन धातुओं को जमीन से निकालना महंगा और जहरीला है। पर्यावरण को नुकसान होता है, और ये हर जगह नहीं मिलतीं।

कितनी जरूरी? बिना इनके, न तो इलेक्ट्रिक गाड़ियाँ बनेंगी, न हथियार, और न ही क्लीन एनर्जी का सपना पूरा होगा।

कल्पना करें, अगर आपके फोन या गाड़ी का प्रोडक्शन रुक जाए, तो आपकी जिंदगी कितनी बदल जाएगी? यही वजह है कि ये धातुएँ देशों की ताकत और तरक्की की चाबी हैं। लेकिन इस चाबी का मालिक आज एक देश है – चीन।

चीन का दबदबा: कैसे बना बॉस?

चीन आज रेयर अर्थ का सबसे बड़ा उत्पादक है। दुनिया का 70% खनन और 85-90% रिफाइनिंग (धातु को इस्तेमाल लायक बनाने का काम) चीन के हाथ में है। लेकिन ऐसा हुआ कैसे?

1980 का मास्टरप्लान: 1980 के दशक में चीन ने रेयर अर्थ पर फोकस किया। उसने सस्ते में ये धातुएँ बेचीं, जिससे अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों की खदानें बंद हो गईं। मिसाल के तौर पर, अमेरिका की माउंटेन पास खदान 2015 में बंद हुई, क्योंकि चीन के सस्ते दामों से मुकाबला नहीं कर सकी।

पावर मूव: 2010 में चीन ने जापान को रेयर अर्थ भेजना बंद कर दिया, क्योंकि दोनों देशों में झगड़ा था। ये दुनिया के लिए खतरे की घंटी थी। हाल ही में, अप्रैल 2025 से, चीन ने फिर से रेयर अर्थ पर सख्त नियम लगाए। अब सात खास धातुओं के लिए डिफेंस लाइसेंस चाहिए, यानी वो तय करता है कि किसे मिलेगा, कितना मिलेगा।

क्यों डर? चीन ने रेयर अर्थ को हथियार की तरह इस्तेमाल किया। अमेरिका और भारत जैसे देशों को अब डर है कि अगर सप्लाई रुकी, तो उनकी इंडस्ट्री और सेना कमजोर हो जाएँगी।

चीन की इस ताकत ने दुनिया को हिलाकर रख दिया। लेकिन अब अमेरिका और चीन के बीच एक डील की बात हो रही है। क्या ये डील दुनिया को राहत देगी?

अमेरिका-चीन डीलः उम्मीद या धोखा?

11 जून 2025 को खबर आई कि अमेरिका और चीन ने रेयर अर्थ पर एक डील की है। ये डील ट्रेड वॉर को कम करने की कोशिश है। लेकिन कहानी इतनी सीधी नहीं है:

क्या है डील? अमेरिका ने चीनी सामान पर 55% टैक्स लगाया, और चीन ने अमेरिकी सामान पर 10% टैक्स। दोनों देशों ने रेयर अर्थ की सप्लाई को आसान करने का वादा किया। मई 2025 में जेनेवा में दोनों देशों ने थोड़ी राहत दी थी, लेकिन चीन की सख्ती अभी भी बनी हुई है।

क्या मुश्किल? चीन ने कहा कि वो सिर्फ छह महीने के लिए रूल्स ढीले करेगा। यानी लंबे समय तक भरोसा नहीं है। अमेरिका की इंडस्ट्री, जैसे ऑटोमोबाइल और डिफेंस, को रेयर अर्थ चाहिए, लेकिन चीन की पॉलिसी अभी भी दुनिया को टेंशन दे रही है।

क्या हो सकता है? अगर डील टूटी, तो गैजेट्स और गाड़ियों के दाम बढ़ सकते हैं। भारत जैसे देशों को और मुश्किल होगी।

इस डील से थोड़ी राहत मिली है, लेकिन भारत जैसे देशों पर इसका असर बड़ा है। आइए, भारत की कहानी देखें।

भारत का हालः सप्लाई रुकी, अब क्या?

भारत रेयर अर्थ मैग्नेट्स का 80% हिस्सा चीन से खरीदता है। पिछले साल हमने 540 टन मैग्नेट्स इम्पोर्ट किए। लेकिन अप्रैल 2025 से चीन ने सप्लाई पर सख्ती की, और भारत की इंडस्ट्री को बड़ा झटका लगा:

ऑटोमोबाइल पर असर: इलेक्ट्रिक गाड़ी बनाने वाली कंपनियों के पास सिर्फ 4-6 हफ्तों का स्टॉक बचा है। नई EV लॉन्च अब जुलाई 2025 या बाद में हो सकती हैं। इससे गाड़ियों के दाम बढ़ सकते हैं।

स्मार्टवॉच का संकट: 2025 की पहली तिमाही में भारत में स्मार्टवॉच की बिक्री 33% कम हुई, क्योंकि मैग्नेट्स की कमी से प्रोडक्शन रुका।

भारत की कोशिश: भारत अब वियतनाम और इंडोनेशिया जैसे देशों से सप्लाई लेने की सोच रहा है। इंडियन रेयर अर्थ्स (IREL) को और ताकत दी जा रही है। सेंट्रल एशिया के साथ मिलकर खनन की प्लानिंग भी हो रही है। लेकिन ये सब में समय लगेगा ।

क्या बदलाव? भारत अब अपनी खदानों को बढ़ाने और नई टेक्नोलॉजी पर काम कर रहा है। सरकार टैक्स छूट दे सकती है ताकि रेयर अर्थ की मैन्युफैक्चरिंग बढ़े।

लेकिन सिर्फ ऑटोमोबाइल ही नहीं, कई और इंडस्ट्रीज भी इस संकट में हैं। स्मार्टफोन, डिफेंस, विंड टर्बाइन, और मेडिकल मशीनें – सब रेयर अर्थ पर निर्भर हैं। अगर सप्लाई रुकी, तो फोन से लेकर मिसाइल तक, सबके दाम बढ़ सकते हैं।

भारत और दुनिया के लिए रास्ता

रेयर अर्थ एलिमेंट्स की कहानी सिर्फ धातुओं की नहीं, बल्कि ताकत, टेक्नोलॉजी, और भविष्य की है। चीन का दबदबा और अमेरिका-चीन की डील दिखाती है कि ये धातुएँ कितनी कीमती हैं। भारत को अब स्मार्ट मूव्स लेने होंगे – अपनी खदानें बढ़ानी होंगी, नई टेक्नोलॉजी लानी होगी, और दूसरे देशों के साथ दोस्ती करनी होगी।

हम सब क्या कर सकते हैं? अपने गैजेट्स और गाड़ियों को समझदारी से इस्तेमाल करें। रीसाइक्लिंग को सपोर्ट करें, क्योंकि पुराने फोन और बैटरी में भी रेयर अर्थ हो सकते हैं। सरकार और कंपनियों को चाहिए कि वो क्लीन एनर्जी और डिफेंस में आत्मनिर्भरता की रेस में तेजी लाएँ। ये छोटी धातुएँ बड़ा बदलाव ला सकती हैं – अगर हम सही कदम उठाएँ।

साजिश, सफेद शर्ट और सोनम

राजा रघुवंशी हत्याकांड की परतें खुलने लगीं

@ आनंद मीणा

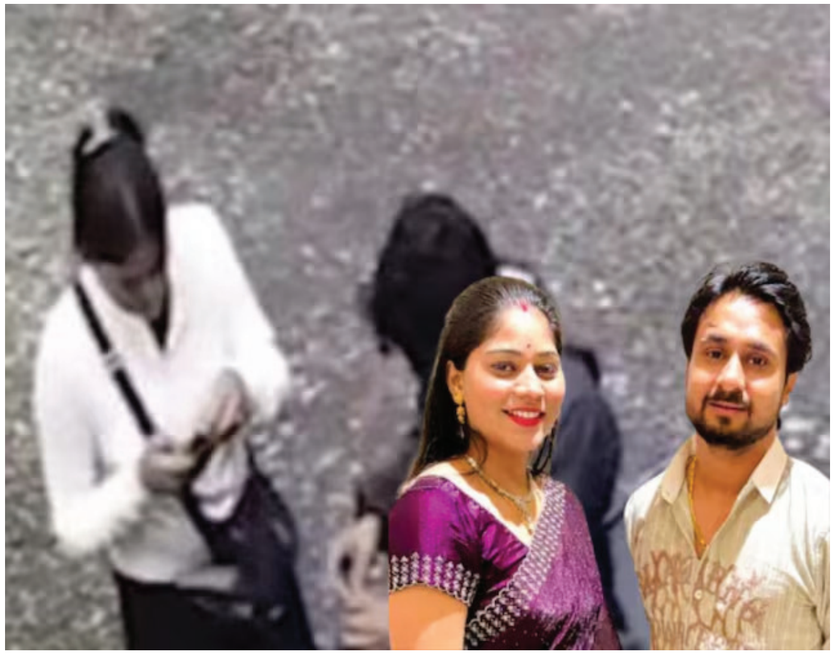

इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की हत्या मामले में हर दिन नए खुलासे हो रहे हैं। अब इस केस से जुड़ा एक और वीडियो सामने आया है, जिससे मामले की गंभीरता और गहराई और भी बढ़ गई है। वीडियो मेघालय के मशहूर डबल डेकर रूट ब्रिज का है, जिसमें सोनम और राजा साथ में चलते हुए नजर आ रहे हैं। यह वीडियो 23 मई 2025 की सुबह करीब 9:45 बजे का है। इसे एक फोटोग्राफर देव सिंह ने रिकॉर्ड किया था, जो संयोगवश उस वक्त उसी जगह मौजूद थे। देव ने दावा किया कि जब वे बाद में अपने वीडियो चेक कर रहे थे, तब यह क्लिप उन्हें मिली। वीडियो में सोनम वही सफेद शर्ट पहने दिख रही है, जो बाद में राजा के पास से बरामद हुई थी।

तेरहवीं पर सिर्फ परिवार के लोग शामिल

रविवार को इंदौर में राजा की तेरहवीं का आयोजन किया गया, जिसमें केवल करीबी रिश्तेदार और परिवार के सदस्य शामिल हुए। राजा के भाई सचिन ने बताया कि उन्होंने तेरहवीं में वही सब खाना बनवाया, जो राजा को पसंद था गुलाब जामुन, मंचूरियन, नूडल्स, दाल-चावल, फल और ड्रायफ्रूट्स। लेकिन इस शोक सभा में सिर्फ भोजन नहीं, बहुत सारे सवाल भी थे। परिवार अभी तक यही जानना चाहता है कि आखिर सोनम ने शादी के कुछ ही दिन बाद राजा को क्यों मरवा दिया? सचिन ने कहा कि हत्यारों के अलावा अभी तक जिन लोगों के नाम सामने आए हैं, उनकी भी गिरफ्तारी क्यों नहीं हुई?

देव सिंह का दावा और सोशल मीडिया पर वीडियो

देव सिंह, जो हरियाणा के सोनीपत से हैं, उन्होंने यह वीडियो अपने सोशल मीडिया पर शेयर किया और लिखा कि ये कपल नोंग्रियाट गांव से लौटते समय ब्रिज पर मिला था। उन्होंने लिखा, "मुझे लगता है यह उस कपल की आखिरी वीडियो रिकॉर्डिंग है।" देव ने यह भी कहा कि उनके पास एक और वीडियो है, जिसमें तीन संदिग्ध आरोपी दिखते हैं, जो कपल से 20 मिनट पहले वहां पहुंचे थे।

सोनम का भाई भी पहुंचा, नार्को टेस्ट की मांग

राजा की तेरहवीं में सोनम का भाई गोविंद भी पहुंचा। उसने बताया कि उसे शिलॉन्ग पुलिस ने पूछताछ के लिए बुलाया है। हालांकि परिवार की मांग है कि सोनम और उसके साथियों का नार्को टेस्ट हो ताकि सच्चाई सामने आ सके। राजा के भाई सचिन का कहना है कि सोनम और उसके साथी अब भी कई बातें छिपा रहे हैं।

गाजीपुर की उजाला यादव का दावा

इस केस में एक अहम नाम है उजाला यादव, जिसने दावा किया कि वह गाजीपुर जा रही बस में सोनम से मिली थी। उजाला ने बताया कि वह बस में राजा की वीडियो देख रही थी, जिससे सोनम भड़क गई थी और उसे फालतू बताने लगी थी। बाद में जब सोनम की गिरफ्तारी की खबर आई, तब उजाला को पता चला कि वह वही लड़की थी। उजाला ने राजा के भाई सचिन से संपर्क कर यह जानकारी दी और ऑडियो रिकॉर्डिंग भी सामने आई।

सवाल अब भी वही कि क्यों मारा राजा को ?

राजा के भाई सचिन कहते हैं, "मुझे अब भी समझ नहीं आता कि ऐसा क्या हुआ था, जो सोनम ने शादी के कुछ ही दिन बाद राजा की हत्या की साजिश रची। अगर सोनम के साथ यह होता, तो शायद हमारे पूरे परिवार को जेल भेज दिया गया होता।" परिवार का आरोप है कि यह सिर्फ एक हत्या नहीं बल्कि एक बड़ी साजिश है, जिसमें और लोग भी शामिल हो सकते हैं। राजा के परिजनों की मांग है कि सोनम के परिवार से भी पूछताछ की जाए और अगर जरूरी हो तो उन्हें भी हिरासत में लिया जाए।

महिलाओं और बच्चों ने भेजे 5 हजार पोस्टकार्ड

इंदौर की 'माता वसुंधरा सेवा समिति' ने इस केस में इंसाफ की मांग को लेकर मेघालय के मुख्यमंत्री को 5 हजार पोस्टकार्ड भेजे हैं। संस्था की अध्यक्ष अनीशा कोठारी ने बताया कि पोस्टकार्ड में मांग की गई है कि केस को फास्ट ट्रैक कोर्ट में चलाया जाए और दोषियों को फांसी दी जाए। मेघालय पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार, 23 मई को सोनम के इशारे पर विशाल चौहान ने राजा के सिर पर पीछे से दो बार वार किया। इसके लिए वह अपने साथ एक छोटी कुल्हाड़ी (दाव) लेकर आया था, जो पेड़ काटने के काम आती है। हमला करने के बाद राजा को खाई में फेंक दिया गया। इस वारदात में आकाश और आनंद भी शामिल थे। राजा का खून आकाश के जैकेट पर लग गया था, जिसे बाद में उसने रास्ते में फेंक दिया। सोनम ने बाद में अपनी जैकेट आकाश को दी, जो बाद में सर्च ऑपरेशन में मिली।

हत्या का पूरा प्लान

सोनम और राज कुशवाह ने हनीमून के बहाने राजा को गुवाहाटी बुलाया। 19 मई को सोनम के साथी विशाल, आकाश और आनंद वहीं पहुंच गए थे और हत्या के लिए हथियार खरीद लिया था। गुवाहाटी में हत्या का मौका नहीं मिला तो सोनम ने राजा को शिलॉन्ग चलने को कहा। 21 मई को दोनों बालाजी गेस्ट हाउस में रुके और अगले दिन चेरापूंजी के पास सोहरा पहुंचे। वहीं 23 मई को सुनसान जगह पर राजा की हत्या कर दी गई।

सोनम इंदौर में थी, फिर गाजीपुर पहुंची

SP विवेक स्यैम के अनुसार, सोनम 26 मई तक इंदौर में राज कुशवाह द्वारा किराए पर लिए गए कमरे में रह रही थी। जब उसे पता चला कि आकाश को पुलिस ने पकड़ लिया है, तो वह इंदौर से भाग गई। उसका प्लान था कि वह सिलीगुड़ी जाकर खुद को पीड़ित दिखाए, लेकिन बाद में वह गाजीपुर में एक ढाबे पर मिली। 23 मई को सोनम ने इंदौर में अपनी सास उमा रघुवंशी को कॉल कर कहा कि वह उपवास पर है। लेकिन उसी दिन शिपारा होम स्टे के संचालक ने पुलिस को बताया कि सोनम ने लौटकर बढ़िया खाना खाया था। यह बात सोनम के बयान से मेल नहीं खाती, जिससे पुलिस का शक और गहरा हुआ।

राजा रघुवंशी की हत्या केवल एक अपराध नहीं बल्कि एक सोची-समझी साजिश थी, जिसमें कई लोग शामिल थे। पुलिस की जांच जारी है, लेकिन परिवार और समाज अब यही चाहता है कि इस मामले में निष्पक्ष और सख्त कार्रवाई हो। सबसे बड़ा सवाल अब भी यही है कि राजा को क्यों मारा गया? जब तक इसका जवाब नहीं मिलता, राजा के परिजन चैन की सांस नहीं ले पाएंगे।

जिन मुश्किलों में मुस्कुराना हो मना

जिन मुश्किलों में मुस्कुराना हो मना,
उन मुश्किलों में मुस्कुराना धर्म है।
जिस वक़्त जीना गैर मुमकिन सा लगे,
उस वक़्त जीना फर्ज है इंसान का,
लाजिम लहर के साथ है तब खेलना,
जब हो समुन्द्र पे नशा तूफ़ान का
जिस वायु का दीपक बुझना ध्येय हो
उस वायु में दीपक जलाना धर्म है।
हो नहीं मंजिल कहीं जिस राह की
उस राह चलना चाहिए इंसान को
जिस दर्द से सारी उम्र रोते कटे
वह दर्द पाना है जरूरी प्यार को
जिस चाह का हस्ती मिटाना नाम है
उस चाह पर हस्ती मिटाना धर्म है।
आदत पड़ी हो भूल जाने की जिसे
हर दम उसी का नाम हो हर सांस पर
उसकी खबर में ही सफ़र सारा कटे
जो हर नजर से हर तरह हो बेखबर
जिस आँख का आखें चुराना काम हो
उस आँख से आखें मिलाना धर्म है।
जब हाथ से टूटे न अपनी हथकड़ी
तब मांग लो ताकत स्वयम जंजीर से
जिस दम न थमती हो नयन सावन झड़ी
उस दम हंसी ले लो किसी तस्वीर से
जब गीत गाना गुनगुनाना जुर्म हो
तब गीत गाना गुनगुनाना धर्म है।

आज की रात तुझे आख़िरी ख़त और लिख दूँ

आज की रात तुझे आख़िरी ख़त और लिख दूँ
कौन जाने यह दिया सुबह तक जले न जले?

बम बारूद के इस दौर में मालूम नहीं
ऐसी रंगीन हवा फिर कभी चले न चले।

ज़िंदगी सिर्फ़ है ख़ुराक टैंक तोपों की
और इंसान है एक कारतूस गोली का

सभ्यता घूमती लाशों की इक नुमाइश है
और है रंग नया ख़ून नई होली का।

कौन जाने कि तेरी नर्गिसी आँखों में कल
स्वप्न सोए कि किसी स्वप्न का मरण सोए

और शैतान तेरे रेशमी आँचल से लिपट
चाँद रोए कि किसी चाँद का कफ़न रोए।

कुछ नहीं ठीक है कल मौत की इस घाटी में
किस समय किसके सबेरे की शाम हो जाए

डोली तू द्वार सितारों के सजाए ही रहे
और ये बारात अँधेरे में कहीं खो जाए।

मुफ़लिसी भूख ग़रीबी से दबे देश का दुख
डर है कल मुझको कहीं ख़ुद से न बाग़ी कर दे

जुल्म की छाँह में दम तोड़ती साँसों का लहू
स्वर में मेरे न कहीं आग अंगारे भर दे।

चूड़ियाँ टूटी हुई नंगी सड़क की शायद
कल तेरे वास्ते कंगन न मुझे लाने दे

झुलसे बाग़ों का धुआँ खोए हुए पात कुसुम
गोरे हाथों में न मेहँदी का रंग आने दे।

यह भी मुमकिन है कि कल उजड़े हुए गाँव गली
मुझको फ़ुर्सत ही न दें तेरे निकट आने की

तेरी मदहोश नजर की शराब पीने की
और उलझी हुई अलकें तेरी सुलझाने की।

फिर अगर सूने पेड़ द्वार सिसकते आँगन
क्या करूँगा जो मेरे फ़र्ज को ललकार उठे?

जाना होगा ही अगर अपने सफ़र से थक कर
मेरी हमराह मेरे गीत को पुकार उठे।

इसलिए आज तुझे आख़िरी ख़त और लिख दूँ
आज मैं आग के दरिया में उतर जाऊँगा

गोरी-गोरी-सी तेरी संदली बाँहों की क़सम
लौट आया तो तुझे चाँद नया लाऊँगा।

गोपालदास नीरज
हिंदी के बेहद लोकप्रिय गीतकार। पद्म भूषण समेत कई पुरस्कारों से सम्मानित।

सस्ती हुई रोजमर्रा की चीजें

थोक महंगाई सबसे नीचे, शेयर बाजार में भी उछाल

@ मोहित प्रजापति

देश में महंगाई को लेकर एक अच्छी खबर सामने आई है। मई महीने में थोक महंगाई दर घटकर 0.39% पर आ गई है, जो पिछले 14 महीनों में सबसे निचला स्तर है। इससे पहले मार्च 2024 में यह 0.53% और अप्रैल में 0.85% रही थी। खाने-पीने की चीजों और रोजमर्रा की जरूरतों के सामान की कीमतों में गिरावट से यह राहत मिली है।उद्योग मंत्रालय ने रविवार, 16 जून को यह आंकड़े जारी किए। इसके अनुसार प्राइमरी आर्टिकल्स, फ्यूल-पावर और मैन्युफैक्चरिंग प्रोडक्ट्स की कीमतों में गिरावट आई है। इसका असर आम लोगों की जेब पर भी पड़ा है।

थोक महंगाई में क्या रहा बदलाव?

थोक मूल्य सूचकांक (WPI) में जिन तीन प्रमुख वर्गों का योगदान होता है, उनमें मई में कुछ इस तरह का बदलाव देखा गया:

प्राइमरी आर्टिकल्स (खाद्यान्न, सब्जियां आदि): अप्रैल में -1.44% थी, जो मई में और घटकर -2.02% पर आ गई।

फूड इंडेक्स (खाने-पीने का सामान): अप्रैल में 2.55% था, जो मई में घटकर 1.72% रह गया।

फ्यूल और पावर: इसमें -2.18% से घटकर -2.27% की गिरावट दर्ज हुई।

मैन्युफैक्चर्ड प्रोडक्ट्स: अप्रैल में 2.62% थी, जो मई में घटकर 2.04% रह गई।

रिटेल महंगाई में भी राहत

12 जून को जारी आंकड़ों के अनुसार, रिटेल महंगाई दर (CPI) भी मई में घटकर 2.82% पर आ गई है। यह पिछले 6 सालों का सबसे निचला स्तर है। इससे पहले मार्च 2019 में रिटेल महंगाई 2.86% पर थी।

मार्च 2024: 3.34%

अप्रैल 2024: 3.16%

मई 2024: 2.82%

इसका मतलब है कि खुदरा बाजार में सामान की कीमतें कम हो रही हैं, जिससे आम उपभोक्ताओं को सीधी राहत मिल रही है। रिटेल महंगाई फरवरी से ही भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के 4% के लक्ष्य से नीचे बनी हुई है।

थोक और खुदरा महंगाई में होता है फ़र्क

थोक महंगाई में उन कीमतों को मापा जाता है, जो एक कारोबारी दूसरे कारोबारी से सामान बेचते समय वसूलता है। इसमें फैक्ट्री के उत्पाद, फ्यूल, मेटल, केमिकल, रबर आदि का वेटेज ज्यादा होता है। जबकि रिटेल महंगाई में आम जनता द्वारा दुकानों से खरीदे गए सामान की कीमतों को मापा जाता है। खाने-पीने के सामान, कपड़े, मकान का किराया और ईंधन जैसे खर्च इसमें शामिल होते हैं।

थोक महंगाई घटने के क्या मायने?

WPI में गिरावट का सीधा असर उद्योगों और उत्पादन क्षेत्र पर होता है। अगर महंगाई लंबे समय तक ऊंची बनी रहे तो कंपनियां यह बोझ उपभोक्ताओं पर डाल देती हैं, जिससे रिटेल महंगाई भी बढ़ती है।हालांकि सरकार केवल सीमित तरीके से ही WPI को नियंत्रित कर सकती है, जैसे ईंधन पर एक्साइज ड्यूटी कम करना। सरकार ने अतीत में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने पर ऐसा किया भी था।

थोक महंगाई के तीन प्रमुख हिस्से

प्राइमरी आर्टिकल्स – 22.62% वेटेज (खाद्य सामग्री, खनिज, कच्चा तेल आदि)

फ्यूल और पावर – 13.15% वेटेज (डीजल, पेट्रोल, बिजली)

मैन्युफैक्चर्ड प्रोडक्ट्स – 64.23% वेटेज (मेटल, प्लास्टिक, टेक्सटाइल, रसायन आदि)

शेयर बाजार में भी आई तेजी

महंगाई में राहत की खबर के बीच शेयर बाजार में भी बढ़त देखने को मिली। 16 जून को सेंसेक्स में करीब 500 अंकों की तेजी आई और यह 81,600 के स्तर पर पहुंच गया। वहीं निफ्टी 150 अंक चढ़कर 24,850 के आसपास कारोबार कर रहा है।सेंसेक्स के 30 में से 26 शेयर हरे निशान में रहे। एनर्जी, IT और FMCG सेक्टर में अच्छा प्रदर्शन देखने को मिला।

एशियाई बाजारों में मिला-जुला रुख

जापान का निक्केई: 380 अंक चढ़कर 38,215 पर

कोरिया का कोस्पी: 21 अंक की तेजी के साथ 2,915 पर

हॉन्गकॉन्ग का हैंगसेंग: 20 अंक गिरकर 23,872 पर

चीन का शंघाई कंपोजिट: 3,378 पर फ्लैट कारोबार

वहीं अमेरिका में 13 जून को डाउ जोन्स में 1.79% और नैस्डेक में 1.30% की गिरावट दर्ज की गई।

ओसवाल पंप्स का IPO खुला

पंप और मोटर बनाने वाली कंपनी ओसवाल पंप्स का IPO 13 जून को खुल चुका है। निवेशक 17 जून तक इसमें अप्लाई कर सकते हैं। कंपनी 20 जून को अपने शेयर BSE और NSE पर लिस्ट करेगी।इस IPO के जरिए कंपनी 1,387.34 करोड़ जुटाना चाहती है, जिसमें 890 करोड़ का फ्रेश इश्यू और 497.34 करोड़ का ऑफर फॉर सेल शामिल है। लगातार घटती थोक और खुदरा महंगाई आम जनता और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए राहत की खबर है। महंगाई में नरमी से जहां आम आदमी की जेब पर बोझ कम हुआ है, वहीं उद्योगों को भी कच्चे माल की लागत में राहत मिल रही है। अगर यही रुझान बना रहा, तो आने वाले महीनों में वित्तीय स्थिरता और आर्थिक विकास दोनों को मजबूती मिल सकती है।

इज़राइल-ईरान तनाव

एक झलक दुनिया के नए संकट की

13 जून 2025 को जब दुनिया सो रही थी, मध्य पूर्व में दो देशों, इज़राइल और ईरान, के बीच एक नया तूफान शुरू हुआ। इज़राइल ने "ऑपरेशन राइजिंग लायन" नाम से ईरान पर हवाई हमले किए, जिसमें 78 लोग मारे गए, जिसमें आम नागरिक और बड़े सैन्य अधिकारी शामिल थे। जवाब में, ईरान ने "ऑनेस्ट प्रॉमिस 3" और "सीवियर पनिशमेंट" नाम से मिसाइल और ड्रोन हमले किए, जिससे इज़राइल के तेल अवीव और यरुशलम में धमाके हुए। यह तनाव सिर्फ दो देशों की लड़ाई नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है। आखिर ये दोनों देश क्यों लड़ रहे हैं? इसका इतिहास, संस्कृति, नैतिकता और असल जिंदगी पर क्या असर होगा?

आसमान में आग: क्या हुआ और क्यों?

13 जून 2025 की रात को इज़राइल ने ईरान के न्यूक्लियर और सैन्य ठिकानों पर हमला किया। नटांज़, शिराज़ और तबरेज जैसे शहरों में ड्रोन और हवाई हमले हुए। ईरान के 78 लोग मारे गए, जिसमें जनरल मोहम्मद बघेरी और होसैन सलामी जैसे बड़े नाम शामिल थे। इज़राइल के पीएम बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा, "ईरान का न्यूक्लियर प्रोग्राम हमारे लिए खतरा है। हमने ये हमला अपनी सुरक्षा के लिए किया।"

ईरान ने तुरंत जवाब दिया। रात को ही "ऑनेस्ट प्रॉमिस 3" ऑपरेशन शुरू हुआ। 100 से ज़्यादा ड्रोन और सैकड़ों मिसाइलें इज़राइल की ओर दागी गईं। तेल अवीव में एक अपार्टमेंट बिल्डिंग तबाह हुई, जिसमें दो लोग मारे गए और 34 घायल हुए। ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्लाह खामनेई ने कहा, "इज़राइल को इसका अंजाम भुगतना पड़ेगा।" दोनों देशों में लोग डर के साये में जी रहे हैं। तेल अवीव में सायरन बज रहे हैं, तो तेहरान में इमारतें जल रही हैं।

ये सिर्फ हथियारों की लड़ाई नहीं। ये दो देशों की सोच, डर और महत्वाकांक्षाओं की टक्कर है। लेकिन इसकी जड़ें कहाँ हैं? चलिए, इतिहास में झाँकते हैं।

पुरानी दुश्मनी: इतिहास का वो पन्ना

इज़राइल और ईरान की दुश्मनी कोई नई नहीं। 1979 में ईरान में इस्लामिक क्रांति हुई, जब शाह का शासन खत्म हुआ और अयातुल्लाह खोमैनी ने सत्ता संभाली। तब से ईरान इज़राइल को गलत मानता है और उसे अमेरिका का "एजेंट" कहता है। दूसरी ओर, इज़राइल को लगता है कि ईरान का न्यूक्लियर प्रोग्राम उसे खत्म कर सकता है।

2000 के दशक में ईरान का न्यूक्लियर प्रोग्राम सामने आया। इज़राइल ने इसे रोकने के लिए कई गुप्त ऑपरेशन किए, जैसे वैज्ञानिकों की हत्या और "स्टक्सनेट" नाम का साइबर हमला। ईरान ने जवाब में हिज़बुल्लाह और हमास जैसे ग्रुप्स को सपोर्ट किया, जो इज़राइल के खिलाफ लड़ते हैं। 2023 में हमास के हमले और 2024 में इज़राइल के इस्फहान पर छोटे हमलों ने तनाव बढ़ाया।

2025 में इज़राइल को मौका मिला क्योंकि ईरान के सहयोगी कमजोर हो गए। सीरिया में बशर असद की सरकार गिरी, हिज़बुल्लाह कमजोर हुआ, और हमास का असर कम हुआ। इज़राइल ने सोचा, "अब सही टाइम है," और हमला कर दिया। लेकिन इसकी कीमत क्या है? क्या ये सही था?

सही-गलत का सवाल: नैतिकता की कसौटी

इस तनाव में सही-गलत का फैसला आसान नहीं। इज़राइल कहता है कि उसने अपनी सुरक्षा के लिए हमला किया। अगर ईरान को न्यूक्लियर हथियार मिल गया, तो इज़राइल का वजूद खतरे में पड़ सकता है। लेकिन ईरान का कहना है कि उसका न्यूक्लियर प्रोग्राम शांतिपूर्ण है, और इज़राइल ने बिना सबूत के हमला किया।

ईरान में 78 लोग मारे गए, जिनमें आम नागरिक भी थे। तेहरान की सड़कों पर लोग अपने घरों की तबाही देख रहे हैं। एक नर्स ने कहा, "हम तो बस अपनी जिंदगी जी रहे थे, फिर ये बम आए।" दूसरी ओर, इज़राइल में भी लोग डर में हैं। एक माँ ने बताया, "मेरे बच्चे सायरन सुनकर रात को सो नहीं पाते।"

नैतिकता का सवाल ये है: क्या एक देश की सुरक्षा दूसरे देश के लोगों की जान से ज़्यादा ज़रूरी है? इज़राइल का हमला प्री-एंप्टिव था, यानी "पहले मारो, फिर सोचो।" लेकिन क्या ये अंतरराष्ट्रीय क़ानून के खिलाफ नहीं? और ईरान का जवाबी हमला, जिसमें तेल अवीव में आम लोग घायल हुए, क्या वो सही था? दोनों देश अपने-अपने दर्द को बड़ा बता रहे हैं, लेकिन सच में पीड़ित वो लोग हैं जो इस जंग का हिस्सा नहीं बनना चाहते।

दुनिया की नज़र: ग्लोबल रिएक्शन

इस जंग का असर सिर्फ इज़राइल और ईरान तक नहीं। पूरी दुनिया चिंतित है। अमेरिका ने इज़राइल की मदद की, उसकी मिसाइल डिफेंस सिस्टम से ईरान के हमले रोके। लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा, "हम इस हमले में शामिल नहीं थे।" फिर भी, ईरान को शक है कि अमेरिका ने चुपके से इज़राइल को सपोर्ट किया।

मध्य पूर्व के देश डरे हुए हैं। सऊदी अरब और अन्य खाड़ी देशों ने शांति की अपील की, क्योंकि तेल की कीमतें आसमान छू रही हैं। अगर ईरान के तेल ठिकानों पर हमला हुआ, तो पूरी दुनिया में पेट्रोल-डीजल महँगा हो सकता है। यानी, आपकी गाड़ी का टैंक भरना और मुश्किल होगा।

संयुक्त राष्ट्र में ईरान ने इज़राइल की शिकायत की। ईरान के राजदूत ने कहा, "ये आतंकवाद है।" लेकिन इज़राइल का कहना है कि उसने अपनी रक्षा की। कुछ देश, जैसे रूस और चीन, ईरान के साथ हैं, जबकि यूरोप और कनाडा शांति की बात कर रहे हैं। लेकिन क्या ये सब सिर्फ बातें हैं? क्या कोई इस जंग को रोक पाएगा?

आगे क्या? हमारी दुनिया का भविष्य

ये तनाव खत्म होने का नाम नहीं ले रहा। इज़राइल ने कहा कि और हमले हो सकते हैं। ईरान ने धमकी दी कि वो "नरक के दरवाज़े खोल देगा।" लेकिन सच ये है कि दोनों देश थक चुके हैं। ईरान के सहयोगी कमजोर हैं, और उसकी मिसाइलें पहले जितनी ताकतवर नहीं। इज़राइल भी जानता है कि लंबी जंग का नुकसान बहुत होगा।

अगर ये जंग बढ़ी, तो मध्य पूर्व में और अस्थिरता आएगी। तेल की कीमतें बढ़ेंगी, जिसका असर भारत जैसे देशों पर भी पड़ेगा। अगर ईरान ने न्यूक्लियर प्रोग्राम तेज़ किया, तो सऊदी अरब और तुर्की जैसे देश भी न्यूक्लियर हथियार बना सकते हैं। ये एक खतरनाक दौड़ होगी।

लेकिन उम्मीद भी है। अमेरिका और ईरान के बीच न्यूक्लियर डील की बातचीत चल रही थी। अगर दोनों देश बातचीत की मेज़ पर आए, तो शायद जंग रुक जाए। लेकिन इसके लिए दोनों को अपने अहंकार को किनारे रखना होगा।

हम, आम लोग, इस जंग को देखकर क्या कर सकते हैं? हमें सचेत रहना होगा। न्यूज़ पढ़ें, लेकिन सिर्फ भरोसेमंद स्रोतों से। शांति की दुआ करें, क्योंकि इस जंग का असर सिर्फ इज़राइल-ईरान तक नहीं, बल्कि हमारी ज़िंदगी पर भी पड़ेगा।

एक सवाल हम सबके लिए

इज़राइल और ईरान की इस लड़ाई में कोई पूरी तरह सही या गलत नहीं। दोनों अपने डर और हितों के लिए लड़ रहे हैं। लेकिन इस जंग की कीमत वो लोग चुका रहे हैं जो बस शांति चाहते हैं। क्या हम ऐसी दुनिया चाहते हैं जहाँ डर और हथियार हावी हों? या हम चाहते हैं कि बातचीत और समझदारी से समाधान निकले?

ये तनाव हमें सोचने पर मजबूर करता है। अपनी ज़िंदगी में हम कैसे छोटे-छोटे तनाव सुलझाते हैं? क्या हम गुस्से में जवाब देते हैं, या शांति से बात करते हैं? शायद इस बड़े संकट से हमें कुछ सीखने को मिले। न्यूज़ को फॉलो करें, सच को समझें, और शांति की आवाज़ को बुलंद करें। क्योंकि आखिर में, हम सब एक ही दुनिया में रहते हैं।

भारत-बांग्लादेश: पड़ोस की नई कहानी, यूनुस का आह्वान और भविष्य की चुनौतियाँ

दो पड़ोसी, एक साझा इतिहास, और अनगिनत सपने। भारत और बांग्लादेश का रिश्ता सिर्फ़ नक्शे की सीमाओं का नहीं, बल्कि दिलों का भी है। मगर आज, ये रिश्ता एक नए मोड़ पर खड़ा है। बांग्लादेश में शेख हसीना की सरकार गिरने के बाद मोहम्मद यूनुस ने सत्ता संभाली। उन्होंने भारत के पीएम नरेंद्र मोदी से एक भावुक अपील की, और जमात-ए-इस्लामी जैसे विवादित ग्रुप पर बैन हटाने का फैसला लिया। ये सब भारत के लिए क्या मायने रखता है? क्या ये दोस्ती पहले जैसी रहेगी, या बदलाव की आँधी इसे नया रंग देगी?

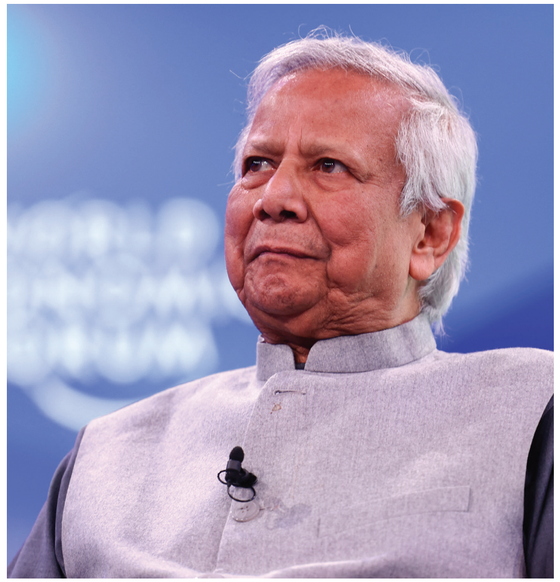

पड़ोस में तूफ़ान: हसीना का पतन, यूनुस का उदय

सपने वो नहीं जो सोते वक़्त देखे जाते हैं, सपने वो हैं जो आपको सोने न दें। बांग्लादेश में अगस्त 2024 में ऐसा ही कुछ हुआ। ढाका की सड़कों पर स्टूडेंट्स और जनता ने मिलकर शेख हसीना की 15 साल की सरकार को उखाड़ फेंका। हसीना भागकर भारत आ गईं। उनकी जगह नोबेल विजेता मोहम्मद यूनुस ने बांग्लादेश की अंतरिम सरकार की कमान संभाली। ये बदलाव सिर्फ़ सियासी नहीं, बल्कि भावनात्मक भी था। बांग्लादेश के लोग नई आज़ादी, नए सुधार चाहते थे।

मगर भारत के लिए ये खबर एक झटके जैसी थी। हसीना भारत की दोस्त थीं। उनके राज में भारत-बांग्लादेश ने ट्रेड, सिक्योरिटी, और बॉर्डर डील्स में खूब तरक्की की। अब यूनुस की सरकार ने हसीना को वापस लाने की माँग की, ताकि उन पर 1971 के गुनाहों का मुकदमा चल सके। यूनुस ने अप्रैल 2025 में बैंकॉक में पीएम मोदी से मुलाकात की और कहा, "हसीना को भारत में शरण देना आपकी मर्ज़ी, मगर उनके बयान बांग्लादेश में गुस्सा भड़का रहे हैं। कृपया उन्हें चुप कराएँ।" मोदी ने जवाब दिया, "ये कंट्रोल करना मुमकिन नहीं।"

क्या पड़ोसी का दर्द समझना इतना मुश्किल है? यूनुस की अपील में एक सच्चाई थी—वो अपने देश को एकजुट करना चाहते हैं। मगर भारत के लिए हसीना को छोड़ना आसान नहीं। ये सिर्फ़ सियासत नहीं, बल्कि नैतिकता का सवाल है। क्या भारत को अपने पुराने दोस्त का साथ देना चाहिए, या नए बांग्लादेश के साथ कदम मिलाना चाहिए?

यूनुस का दिल: भारत से दोस्ती, मगर शर्तों के साथ

जिंदगी में दोस्ती आसान नहीं होती। यूनुस ने बार-बार कहा कि वो भारत से गहरी दोस्ती चाहते हैं। जून 2025 में उन्होंने ईद-उल-अज़हा पर मोदी जी को चिट्ठी लिखी। बोले, "हमारे देशों में आपसी सम्मान और समझदारी हो, यही रास्ता है।" मोदी ने जवाब में कहा, "ईद हमारे संस्कृति का हिस्सा है, और ये त्योहार बलिदान और भाईचारे का है।" ये खत एक उम्मीद की तरह थे, जैसे दो पड़ोसी जो झगड़े के बाद फिर से दोस्ती की बात करें।

मगर सच ये है कि यूनुस के मन में भारत को लेकर कुछ शिकवे भी हैं। वो कहते हैं कि भारत ने सिर्फ़ हसीना से दोस्ती की, बाकी बांग्लादेशी ग्रुप्स से दूरी रखी। जनवरी 2025 में वर्ल्ड इकॉनमिक फोरम में उन्होंने बोला, "भारत की मीडिया और कुछ लोग बांग्लादेश के बारे में फेक न्यूज फैलाते हैं।" ये बयान भारत को चुभा। भारत का मानना है कि यूनुस की सरकार हिंदुओं और दूसरी माइनॉरिटीज की सिक्योरिटी में नाकाम रही है। दिसंबर 2024 में बांग्लादेश के अगरतला मिशन पर हमला हुआ, जिसके बाद भारत ने सख्त रुख़ अपनाया।

यूनुस का कहना है कि बांग्लादेश बदल रहा है। वो सुधार चाहते हैं, मगर भारत को भी उनकी बात माननी होगी। ये रिश्ता तभी मजबूत होगा, जब दोनों तरफ़ से इक्विटी और रेस्पेक्ट हो।

जमात की वापसी: पुराने ज़ख़्म, नया डर

हर बदलाव के साथ कुछ पुराने ज़ख़्म हरे हो जाते हैं। जून 2025 में बांग्लादेश की सुप्रीम कोर्ट ने जमात-ए-इस्लामी पर लगा बैन हटा लिया। ये वो ग्रुप है, जिसने 1971 में बांग्लादेश की आज़ादी का विरोध किया था और पाकिस्तानी सेना का साथ दिया था। हसीना ने 2013 में जमात पर बैन लगाया था, मगर यूनुस की सरकार ने इसे फिर से पॉलिटिक्स में आने दिया। अब जमात 2026 के इलेक्शन में हिस्सा लेगा।

भारत के लिए ये खबर चिंता की लकीरें लाई। जमात का इतिहास भारत-विरोधी रहा है। 2001 में उनके रोल की वजह से बांग्लादेश में कई लोग उनसे नफ़रत करते हैं। भारत को डर है कि जमात की वापसी से बांग्लादेश में इस्लामिक कट्टरपंथ बढ़ेगा, जो भारत की सिक्योरिटी के लिए ख़तरा बन सकता है। 2004 में चट्टग्राम में हथियारों की तस्करी का मामला, जिसमें जमात का नाम आया, भारत के लिए एक सबक था। उस वक़्त हथियार भारत के नॉर्थ-ईस्ट में आतंकियों तक पहुँचने वाले थे।

यूनुस की सरकार का ये फैसला सियासी रणनीति हो सकता है। वो जमात और स्टूडेंट ग्रुप्स का सपोर्ट चाहते हैं, ताकि 2026 के इलेक्शन में मज़बूत रहें। मगर ये फैसला बांग्लादेश की सेक्युलर पहचान पर सवाल उठाता है। भारत में लोग पूछ रहे हैं—क्या ये पड़ोसी अब बदल गया है? क्या जमात की वापसी सिर्फ़ सियासत की चाल है, या कुछ गहरे बदलाव का इशारा? जिंदगी में कभी-कभी पुराने ज़ख़्मों को भूलना पड़ता है, मगर क्या उनसे सबक भूलना चाहिए?

भारत की नज़र: डर, आशा, और ज़िम्मेदारी

पड़ोस में आग लगे, तो धुआँ अपने घर भी आता है। भारत के लिए बांग्लादेश सिर्फ़ एक पड़ोसी नहीं, बल्कि एक साझा सपना है। मगर यूनुस की नीतियाँ भारत को चिंता दे रही हैं। जमात की वापसी से सिक्योरिटी का ख़तरा बढ़ा है। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हमले की खबरें—जैसे दिसंबर 2024 में हिंदु मॉन्क चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ़्तारी के बाद हिंसा—भारत के दिल को छू रही हैं। भारत के बॉर्डर स्टेट्स जैसे पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा में लोग गुस्से में हैं।

भारत को ये भी डर है कि बांग्लादेश चीन और पाकिस्तान के करीब जा सकता है। यूनुस की सरकार ने चीन से इकॉनमिक हेल्प ली है, और जमात ने पाकिस्तान से दोस्ती की बात की। ये भारत के लिए चेतावनी है, क्यूँकि बांग्लादेश का लोकेशन स्ट्रैटेजिक है—। ये भारत के नॉर्थ-ईस्ट को मेनलैंड से जोड़ता है। अगर बांग्लादेश भारत से दूर हुआ, तो भारत की रीजनल पावर कम हो सकती है।

मगर भारत सिर्फ़ डर से नहीं जी सकता। उसे ज़िम्मेदारी भी लेनी है। भारत ने हमेशा बांग्लादेश के साथ ट्रेड, एनर्जी, और कनेक्टिविटी में काम किया। यूनुस ने कहा है कि वो पुराने एग्रीमेंट्स को रिव्यू करेंगे, और जो नुकसानदेह हैं, उन्हें कैंसिल करेंगे। ये एक मौका है। भारत अगर यूनुस की सरकार से खुलकर बात करे, और उनकी शिकायतों का जवाब दे, तो शायद दोस्ती फिर से मजबूत हो। मगर सवाल है—क्या भारत पुराने दोस्त (हसीना) और नए पड़ोसी (यूनुस) के बीच बैलेंस बना पाएगा?

भविष्य की राह: दोस्ती का नया रंग

हर कहानी का अंत नए सवालों का जन्म देता है। अगर यूनुस या उनकी जैसी सोच बांग्लादेश में रही, तो भारत का रिश्ता कैसा होगा?। ये रास्ता आसान नहीं। जमात का असर बढ़ने से भारत को सिक्योरिटी और माइनर की सेफ़्टी की चिंता रहेगी। बांग्लादेश में 2026 का इलेक्शन एक बड़ा मोड़ होगा। अगर जमात या बीएनपी सत्ता में आए, तो भारत-विरोधी माहौल बन सकता है। मगर अगर यूनुस सुधार लाए और स्टेबिलिटी बनाए, तो वो भारत के साथ ट्रेड और कोऑपरेशन बढ़ा सकते हैं।

यूनुस की सोच में एक बात साफ़ है—वो इक्विटी और रेस्पेक्ट चाहते हैं। वो कहते हैं कि भारत-बांग्लादेश का रिश्ता तभी मज़बूत होगा, जब दोनों तरफ़ से समझदारी हो। ये बात भारत को भी सोचने पर मजबूर करती है। क्या भारत सिर्फ़ अपने इंटरेस्ट देखे, या पड़ोसी की ज़रूरतों को भी समझे?।

भारत और बांग्लादेश का इतिहास, संस्कृति, और सपने एक-से हैं। 1971 में भारत ने बांग्लादेश की आज़ादी में मदद की। आज, जब बांग्लादेश एक नए दौर से गुज़र रहा है, भारत को फिर से दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहिए। डायलॉग, ट्रेड, और म्यूचुअल रेस्पेक्ट से ये रिश्ता फिर से चमक सकता है। मगर इसके लिए दोनों देशों को अपने ज़ख़्म भूलकर, भविष्य की ओर देखना होगा।

क्या पड़ोस की ये कहानी सिर्फ़ सियासत की है, या इसमें इंसानियत की भी बात है?। हम सब, चाहे भारत से हों या बांग्लादेश से, एक सवाल पूछें—क्या हम अपने पड़ोसी को समझने की कोशिश करेंगे?। ये सवाल सिर्फ़ यूनुस या मोदी के लिए नहीं, बल्कि हम सबके लिए है। आख़िर, पड़ोस तो दिल से दिल तक का रास्ता है।

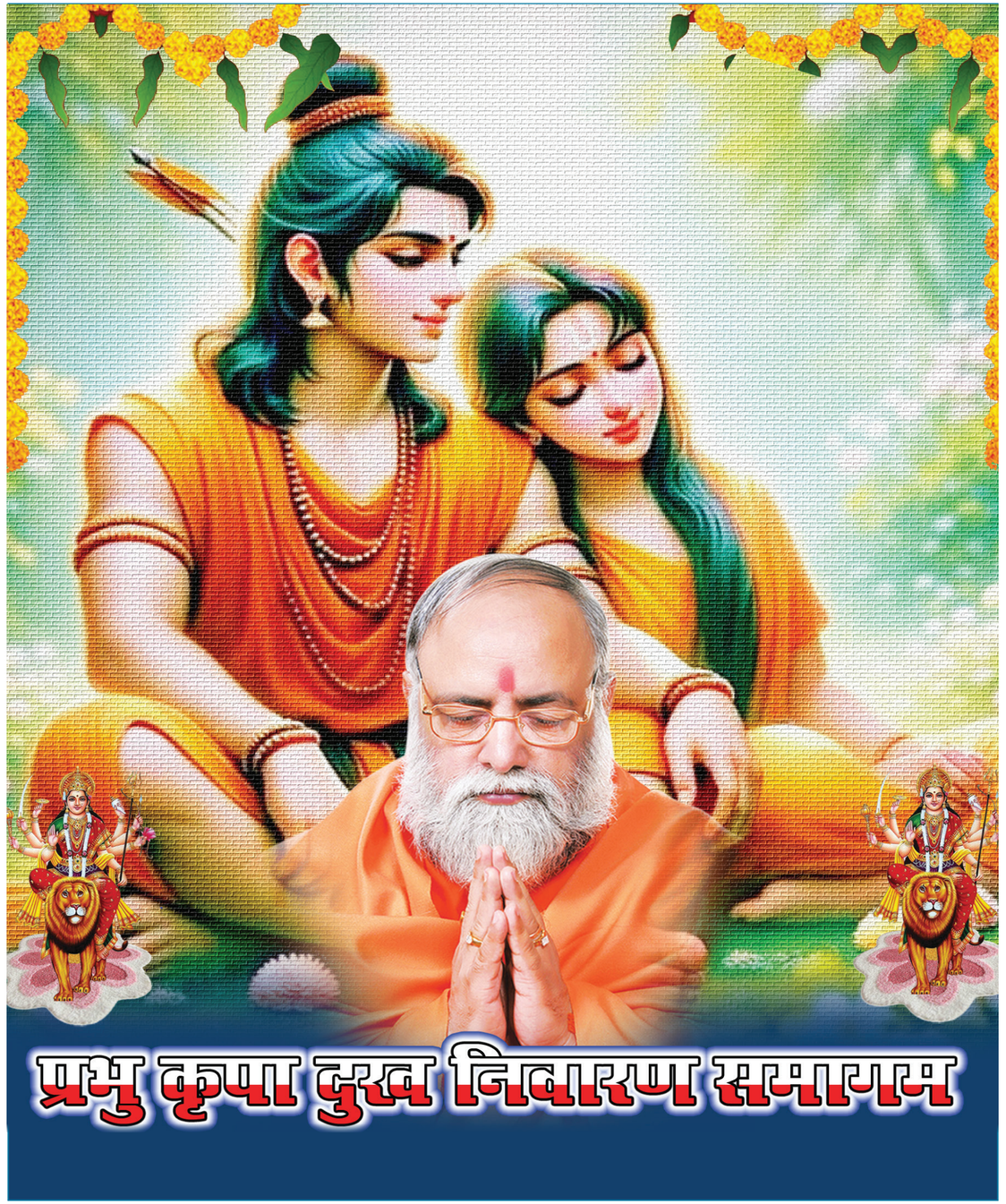

BY

Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries